—: तृतीय परिच्छेद :—

Chapter - 3

-:: तृतीय परिच्छेद ::-

राजा परमाल का प्रभुत्व :-

लोक महागाथा काव्य आल्हा [परमाल रासो] उत्तर भारत में मौखिक रूप से प्रचलित एक ओजस्वी एवं करुण कथा है, जिसमें महोबा और कालिंजर के चन्देल-शासक परमर्दिदेव [परमाल] तथा उनके आश्रितों या आश्रित वीरों आल्हा-ऊदल के अनुपम त्याग और अद्वितीय शौर्य का वर्णन है। यह गाथा ऐतिहासिक आधार रखते हुए भी अतिशयोक्ति पूर्ण कल्पनाओं तथा तंत्र-मंत्र जादू-टोना के प्रसंगों एवं चमत्कार-विलक्षण कृत्यों के रोमांचकारी वर्णनों से भरी पड़ी है। आल्हा की कथा इतनी रोचक है कि ग्रामीण जनता इसको सुनकर इतनी विभोर हो जाती है कि वह उस कथा के मूल ऐतिहासिक आधार के साथ-साथ चमत्कारी काल्पनिक गाथा को भी सत्य मानने लगती है। कुछ विद्वान आलोचक परमाल रासो की कथा को नितांत काल्पनिक एवं चमत्कारी मानते हैं, जिससे इसकी ऐतिहासिकता पर संदेह होने लगता है। परन्तु वास्तविकता यह नहीं है बल्कि वास्तविकता यह है कि- जिस प्रकार अनेक प्राचीन भवनों और खण्डहरों की मरम्मत कर उन्हें आकर्षक बना दिया जाता है, फिर भी उसकी मूल में छिपे हुए तत्व उसके इतिहास को उद्घाटित करते हैं। उसी प्रकार की स्थिति इस मौखिक रूप में प्रचलित लोकगाथा-काव्य आल्हा की भी है। [1]

राजा परमाल या परमर्दिदेव चंदेरी-नरेश कीर्तिभान के पुत्र थे। अपने पिता की मृत्यु बाद राज्य का कार्यभार संभाला। परमाल दो भाई थे- एक तो स्वयं तथा दूसरा- पदमसिंह। राजा परमाल को कई नामों से पुकारा गया है, जैसे- परमालिक, चंदेलराय, परमर्दिदेव आदि। इनका शासन-काल सन् 1165 से 1203 तक माना जाता है। "परमाल रासो" के रचयिता महाकवि जगनिक ने हालांकि अपने काव्य में नायकत्व आल्हा को प्रदान किया। ऐसा प्रतीत होता है, कि वह आल्हा जैसे बनाफर वीर की वीरता से अत्यधिक प्रभावित था। दूसरा यह भी विचारणीय लगता है कि वह चाटुकारी तत्कालीन दरबारी कवि-प्रवृत्ति का अंधानुकरण नहीं करना चाहता था।

राजा परमाल का व्यक्तित्व एवं वीरता सराहनीय रही है। वह अपने समय के कुशल योद्धा माने जाते हैं। इनके मुख्यमंत्री चिंतामणि थे, जो बड़े ही नीति-निपुण एवं मेधावी थे। परमर्दिदेव ने अपने शासनकाल में बावनगढ़ में विजय प्राप्त की

---

[1] पृथ्वीराज रासो का महोबा खंड तथा परमाल रासो [आल्हखंड] पर तुलनात्मक दृष्टि - डॉ० भगीरथ मिश्र, भूमिका.

थी । कोई भी राजा इनसे लोहा लेने का साहस न करता था । ऐसा माना जाता है कि राजा परमाल ने अपने पराक्रम एवं वीरता के द्वारा पूरे भारतवर्ष यानी बावनगढ़ में एक क्षत्र राज्य स्थापित कर लिया था । इतना ही नहीं इन्हें कभी पराजय का मुँह नहीं देखना पड़ा । जब यह अजात-शत्रु बन गए, तो उन्होंने युद्ध न करने की प्रतिज्ञा की और देवी द्वारा प्रदत्त खांड़ा [तलवार] क्षीरसागर में धोकर, पूजकर रख दिया । यथा :-

मानिके आज्ञा अमर गुरु की, धरदी पूज सिरोही ढाल ।
पूजिके खांड़ा सागर धरि दओ, अबना हाथ गहैं तलवार ।[1]

कहा जाता है कि चन्द्रमा द्वारा प्रसन्न होकर राजा परमाल की पटरानी मल्हना को पारस बटिया प्रदान की गई थी, जो लोहे छूने पर उसे सोना बना देती थी । यथा :-

पारस बटिया चंदा दीन्हीं, लोहा छुवत स्वान होइ जाय ।
किसी बात की कमती नाहीं, भोगत राजि चंदेलाराय ।[2]

इस प्रकार परमर्दिदेव अपने समय के कुशल योद्धा एवं महान प्रशासक थे । इन्होंने महोबा में अनेक ताल व मंदिरों का निर्माण कराया । खजुराहो के मंदिर चंदेलों की वास्तुकला का प्रज्वलंत उदाहरण है । दिल्ली में पृथ्वीराज चौहान, कन्नौज में जयचंद आदि सभी राजा परमाल की शक्ति के समक्ष ओछे पड़ते थे । संयोगिता स्वयं में [दिल्ली की लड़ाई] राजा रतीभान जो कि जयचंद के भाई थे, वीरगति को प्राप्त हो गए थे । ऐसी स्थिति में कन्नौज की सत्ता और भी कमजोर हो गई थी ।

राजा जयचन्द का परिमाल को बुलाना :-

राजा जयचन्द्र राठौर वंशी बेन चक्कवे के पुत्र थे । यह अत्यन्त शूर-वीर व प्रतिभाशाली थे । बेन चक्कवे के दो पुत्र थे- जयचन्द तथा रतीभान । इनकी राजधानी कन्नौज थी । भारतीय इतिहास में राठौर वंश बड़ा ही प्रतिष्ठित वंश था । राजा रतीभान संयोगिता हरण में पृथ्वीराज चौहान के साथ हुए युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गए थे । राठौर वंश में अब केवल जयचन्द शेष रह गए थे । रतीभान के पुत्र लाखन राना अभी छोटे थे । शक्तिहीन साम्राज्य की स्थिति में मालगुजारी वसूल करने की

---

[1] परिमाल का ब्याह - अमोलसिंह भदोरिया, पृ. 47.
[2] -वही- : पृ. 3.

समस्या उत्पन्न हो गई थी । राज्य में अराजकता का वातावरण फैला हुआ तथा प्रजा में शक्तिशाली लोग मनमानी कर रहे थे ।

एक दिन राजा जयचंद दरबार में बिराजमान थे, तभी धनुआ तेली नामक मुख्यमंत्री ने महाराज से शिकायत की, कि राज्य की मालगुजारी तथा घाटों {गंगा-घाट} का पैसा वसूल नहीं हो पा रहा है । राज्य में अराजकता का वातावरण फैला हुआ है । राज्य की शक्ति राजा रतीभान के अभाव में कमजोर हो गई है । आप कोई उपाय बताएं । राजा जयचंद मूक रहे । तब उनके मंत्री ने कहा- कि राजा परमाल अजातशत्रु तथा पराक्रमी है । यदि उन्हें राज्य के सहायतार्थ सम्मान बुलाया जाए, तो वह अवश्य हमारी मदद कर सकते है । यह सुझाव राजा जयचंद को पसन्द आया । उन्होंने तुरन्त कलमदान मंगवाया और राजा परमाल के लिए पत्र लिखकर संदेशवाहक के द्वारा प्रेषित कर दिया । संदेशवाहक पत्र लेकर चंदेरी-नरेश के पास पहुंचता है । सारे समाचार से राजा परमाल अवगत होते हैं । वह संदेशवाहक का यथोचित सम्मान करते हैं । पत्रलिखित भावों से राजा परमाल गद-गद हो जाते हैं ।

पद्मसिंह राजा परमाल का छोटा भाई था, वह भी चंदेरी में रहता था । जयचंद के पत्रानुसार राजा परमालिक, पद्मसिंह के अधीन राज्य का कार्यभार सौंपकर कन्नौज की ओर प्रस्थान करने की योजना बनाते हैं । राजा चन्देले हाथी पर सवार हो कन्नौज की ओर प्रस्थान कर देते हैं । कई दिनों का रास्ता तय करके वह कन्नौज पहुँचते हैं । फाटक पर दरबारी द्वारा परिचय होता है । चन्देल-नरेश के आगमन की सूचना पाकर जयचंद अत्यन्त हर्षित होते हैं । यथोचित सम्मान के साथ उन्हें महलों में ले जाते हैं ।

दरबार में पहुँचकर राजा परमाल यथोचित आसन ग्रहण करते हैं । वहां बड़े-बड़े क्षत्री बिराजमान थे । भव्य दरबार देखकर राजा परमाल दंग रह गए । जयचन्द ने परमालिक के शक्ति परीक्षण के लिए उनके आसन के निकट लोहे के सात तवा रखवा दिए । परमाल सब कुछ समझ गए । उन्होंने अपना दैवीय खांडा उठाया और तवों पर प्रहार किया । खाड़े के प्रहार से सातों तवा फट गए और खांडा जमीन में धंस गया । यह देखकर राजा जयचंद चकित रह गए । अब उन्हें विश्वास हो गया था

- -

{1} संदर्भ : परिमाल का ब्याह - अमोलसिंह - पृ. 5-6.

कि चंदेलाराय हमारी सहायता करने में सक्षम है । राजा जयचंद उन्हें सारी राज्य की समस्या से अवगत कराते हैं । परमाल पूरा आश्वासन देते हैं । इस प्रकार राजा परमाल ससम्मान जयचन्द के दरबार के नायब नियुक्त हो जाते हैं । दोनों में लिखित करार हो जाता है । धनुर्वन्तेली लला तमोली आदि मंत्री सभी परमाल के अधीन होकर कार्य करने लगते हैं ।

राज्य का कार्यभार राजा परमाल की देखरेख में चलने लगा । महलों में खुशियां मनाई गई । जलसा हुआ । उस समय महोबा, कन्नौज राज्य की एक रियासत था । वहां पर राजा बासुदेव राज्य करते थे । उनके दो पुत्र थे- माहिल व भूपति । महोबा रियासत से बारह साल से मालगुजारी का पैसा प्राप्त न हो सका था । माहिल चुगल-खोर तो था ही, साथ ही साथ पृथ्वीराज से भाईचारे का संबंध था, जिससे महोबा राज्य को संरक्षण मिलता था । यह बात जयचंद को अक्सर कष्ट देती थी । महोबा की सारी कहानी जब परमाल ने सुनी तो उन्होंने आश्वासन दिया कि आप चिन्ता न करें । मैं राज्य की सारी स्थिति मजबूत कर दूंगा । चोर-लुटेरों का सर्वनाश करके राज्य में अमन-चैन का वातावरण उपस्थित कर दूंगा ।

परमाल का घाटों का इन्तजाम करना :-

राजा जयचंद की आज्ञानुसार परमाल धनुवां तेली (जयचंद का मंत्री) एवं कुछ बहादुर सिपाहियों को लेकर गंगा नदी के घाटों पर पहुँचते हैं । घाटों की उतराई का पैसा काफी समय से राजकोष में जमा नहीं किया गया था । राजा परमाल ने मदवारी (लेखपाल) को बुलाकर सभी करदाताओं के पास संदेश भेजा । जब उन्होंने सुना कि चंदेरी-नरेश राजा जयचंद के नायब मुंशी नियुक्त किए गए हैं, तो भयभीत होकर उन्होंने सारा बकाया चुकता कर दिया । उन्हीं मल्लाहों में झम्मन नाम का एक मल्लाह था, जिसने बारह वर्ष से कोई पैसा नहीं दिया था । अच्छी आय के कारण वह धनी हो गया था । उसे पैसे का अभिमान था, कई कामगार उसके यहाँ कार्यरत थे । लेखपाल ने जब पैसा अदा करने की सूचना दी, तो वह युद्ध करने को तैयार हो गया । धनुवां तेली ने झम्मन मांझी का किला घेर लिया । दोनों ओर से भयंकर युद्ध हुआ । अन्त में झम्मन मल्लाह को बन्दी बना लिया गया और राजा परमाल के सामने पेश किया गया । राजा परमाल ने उसे यथोचित सजा दी और इस प्रकार झम्मन मल्लाह ने परमाल के प्रताप से कन्नौज नरेश की अधीनता स्वीकार कर ली ।

इस प्रकार राजा परमालिक ने संपूर्ण गंगा घाटों के बकाया रकम की वसूली करके कन्नौज के शाही खजाने में भिजवा दी । राजा जयचंद बड़े कृतार्थ हुए । उन्होंने कहा, कि- महोबा हमारी रियासत है जहां माहिल राज्य करता है । उसे दिल्लीपति पृथ्वीराज का संरक्षण प्राप्त है । काफी समय से कर का पैसा भी नहीं भेजा है । राजा जयचन्द ने प्रसन्न होकर परमालिक से कहा कि- तुम महोबा का पैसा वसूल करके वहीं राज्य करो । मैं तुम्हें, तुम्हारी वीरता एवं घाटों की वसूली के उपलक्ष में महोबा इनाम के रूप में देता हूँ । उधर परमर्दिदेव को काफी समय चंदेरी छोड़े हो गए थे । अतः वह वापस जाना चाहते थे । अतएव जयचंद से आज्ञा लेकर वह चन्देरी के लिए प्रस्थान करते हैं । साथ ही साथ उन्होंने राजा जयचंद को यह भी आश्वासन दिया, कि वे महोबा पर चढ़ाई करके उसे खाली करवा लेंगे तथा बकाया पैसा भी वसूल कर लेंगे ।

राजा परमाल अपने राज्य की ओर आ रहे थे कि रास्ते में थककर उन्हें आराम करने की आवश्यकता हुई । महोबा नगर की सीमा में एक सुन्दर उद्यान था । परमालिक ने अपना घोड़ा खड़ा कर दिया । स्नान आदि करके विश्राम करने लगे और गहरी नींद में सो गए । जब वह जागे, तो उन्होंने सोचा, कि- बाग घूम लिया जाए । वह घूमते हुए एक सरोवर के किनारे पहुँचे । वहां उन्हें एक सुन्दर फोटो मिला और वहीं राजकुमारी का एक वस्त्र भी मिला । बात यह थी कि राजा बासुदेव की पुत्री मल्हना बाग में घूमने आई थी और जल्दी में वह फोटो और चीर छोड़कर चली गई थी । राजा परमाल मल्हना की फोटो देखकर मुग्ध हो गए और उससे विवाह करने की सोचने लगे । किसी प्रकार वह चंदेरी पहुँचते हैं, लेकिन मन-मस्तिष्क, दिल-दिमाग राजकुमारी के चित्र पर लगा हुआ था । अतः राज-काज में उनका मन नहीं लगता था । उनकी उदासी देखकर पदमसिंह बहुत चिंतित हुए । परमाल की चिन्ता का कारण जानने से उन्होंने बताया कि- यह बासुदेव (महोबा-नरेश) की सबसे छोटी पुत्री मल्हना की तस्वीर है तथा यह वस्त्र भी उसी का है । अब राजा परमाल आश्वस्त हुए और महोबा पर चढ़ाई करने की योजना बनाने लगे । राजा जयचंद से किए गए वादे के अनुसार भी उन्हें महोबा पर चढ़ाई करना ही थी, परन्तु यह एक और अवसर मिल गया ।

परमाल द्वारा महोबा पर चढ़ाई करना :-

जब परमाल को यह ज्ञात हो गया, कि यह तस्वीर और चीर राजकुमारी मल्हना की है, तब उनकी सारी चिन्ता दूर हो गई। उन्होंने तुरन्त चिन्तामणि मंत्री तथा चूरामणि पंडित को बुलाकर विवाह का शुभ मुहूर्त निकलवाया। तोप-दरोगा को बुलाकर सभी तोपें तैयार करने का आदेश दे दिया, उधर प्रधान सेनापति को बुलाकर हाथी, घोड़े व पैदल सेना की तैयारी का आदेश दे दिया। इस प्रकार कुछ ही समय में राजा चन्देल के वीर सैनिक अपनी सम्पूर्ण साज-सज्जा के साथ तैयार हो गए। हाथी, घोड़े सजवाए गए। पैदल सेना भी अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ तैयार हो गई। राजा परमाल भव्य हाथी पर सवार हुए। सम्पूर्ण सेना धूल उड़ाती हुई महोबा के लिए चल दी। झण्डों से वातावरण लालिमायुक्त हो गया था। रास्ते में कई दिन व्यतीत करके चतुरंगिनी सेना महोबा नगर के समीप पहुँचती है और पड़ाव डाल देती है।

राजा परमाल चिंतामणि मंत्री से सलाह करते हैं और ऐपनवारी को भेजने की बात होती है। उधर महोबा में राजकुमारी मल्हना चिंतित थी क्योंकि उसी बाग में राजा परमाल अपने घोड़े का कोड़ा भूल आए थे। जब राजकुमारी अपना खोया हुआ चीर और तस्वीर ढूँढने आई तो वह कोड़ा उसे मिल गया था और उसने यह निश्चय कर लिया था, कि जिस राजकुमार का यह कोड़ा होगा वह उसी के साथ विवाह करेगी। राजा बासुदेव और उनकी पत्नी अपनी पुत्री की प्रतिज्ञा से चिंतित थे।

लोकरीति के अनुसार कल्लू बारी ऐपनवारी लेकर राजा बासुदेव के दरबार में जाता है तथा चंदेरी सेना व परमाल का सारा हाल कह सुनाता है। वह अपना नेग मांगता है। राजा बासुदेव अत्यन्त रूष्ट हो जाते हैं। दरबार की रौनक फीकी पड़ जाती है। नेग के रूप में महोबा दरबार में कल्लूबारी के साथ माहिल-भूपति आदि का भीषण संग्राम होता है। कल्लूबारी अपनी अद्भुत वीरता का परिचय देकर वापस तम्बू में लौट आता है और सारा हाल राजा परमाल से बयान करता है।

महोबा का संग्राम :-

चंदेरी-सेना द्वारा महोबा घेरे जाने का समाचार राजा बासुदेव को अत्याधिक चिंतित और व्याकुल कर देता है। वह अपने पुत्र माहिल और भूपति को युद्ध करने का आदेश देते हैं। दोनों वीर बेटा अपना लश्कर सजाकर रणक्षेत्र के लिए रवाना हो जाते हैं।

दोनों सेनाओं में भीषण युद्ध होता है । तोपों की गड़गड़ाहट और तलवारों की झनझनाहट से वातावरण गुंजायमान हो जाता है । दोनों ओर के हजारों सिपाही मौत के शिकार हो जाते हैं । माहिल और परमाल का आमना-सामना होता है । दोनों अपनी-अपनी वीरता का परिचय देते हैं । अन्त में राजा परमाल की सेना के सामने परिहार वंशी माहिल की सेना के पांव उखड़ जाते हैं । माहिल जान बचाकर भाग जाता है । भूपति सिंह परमाल की सेना का सामना करने के लिए युद्धस्थल में अकेले पड़ जाते हैं । वह अपूर्व रण-कौशल का परिचय देता है । अन्त में बन्दी बना लिया जाता है । अपने भाई को बन्दी बनाए जाने की खबर पाकर माहिल लज्जित हो जाता है । वह वापस दरबार में पहुँच कर, अपने पिता बासुदेव को युद्ध का सारा हाल कह सुनाता है । अपने पुत्र को दुश्मन के सामने से कायरता पूर्वक भागने के समाचार से राजा बासुदेव लज्जित हो जाते हैं । वे माहिल को भला-बुरा कहते हैं । यथा :-

सुनिकै बातें ये लड़िका की, राजा काल रूप होय जाए ।
लरिका नाहीं तू दुश्मन है, खेतन आयो भाय बंधाय ।
असर न आयो रजपूती का, माँ की डारी कोख नसाय ।
खबरि जो होती इन बातन की, मेरे कूर भियो औतार ।
जादिन जन्मो महतारी को, डरतेउ सोहर ही में मार ।
हटिजा पाजी मेरे आगे से, गिरिणा किसी कुआ में जाय ।
बासुदेव गद्दी पर तड़पे, दाँतन नीचे होंठ चबाय ।§।§

अपने पुत्र के कायरता पूर्ण परिचय से क्षुब्ध राजा बासुदेव स्वयं फौजें सजाकर परमाल का रणखेत में सामना करने के लिए उद्यत होते हैं । दोनों वीरों में घमासान युद्ध होता है । राजा बासुदेव, परमाल से नगर घेरने का कारण पूँछते हैं । तब वह जवाब देते हैं कि- नगर महोबा रियासत कन्नौज का एक अंग है । तुमने बारह साल से कर का पैसा अदा नहीं किया है । तुरन्त बकाया रकम का भुगतान करवा दो तथा अपनी बेटी मल्हना का ब्याह मेरे साथ करके सम्मान डोला दे दो । यह बात बासुदेव के आक्रोश को और भी बढ़ा देती है । माहिल भी युद्ध में पुनः अपने पिता की सेना के साथ गए हुए थे । युद्ध क्षेत्र से भागने की सारी कोशिशें उनकी नाकाम हो जाती हैं । अतः बेबश होकर वह भी युद्ध करने के लिए तत्पर हो जाता है । घोड़ी चितरंगिन और देवीय

§।§ परिमाल का ब्याह - अमोलसिंह, पृ. 3।.

खाड़े के द्वारा परमाल युद्ध में विजय प्राप्त करते हैं । बासुदेव का रणकौशल श्रीहीन हो जाता है और वे बन्दी बना लिए जाते हैं । भीषण मारकाट और अपने पुत्रों के बन्दी बनाए जाने की घटना उन्हें परिताप दे रही थी । वह बार-बार यही सोच रहे थे, कि क्षत्री कुल में कन्या का जन्म होना ही अभिशाप है । अत्यन्त चिंतन-मनन के उपरान्त राजा बासुदेव, चंदेलाराय की अधीनता स्वीकार कर लेते हैं और उन्हें ब्याह करने का वचन देते हैं । इस प्रकार राजा परमाल उनके दोनों पुत्रों को रिहा कर देते हैं ।

माहिल की कुटिल नीति तथा पृथ्वीराज और परमाल का युद्ध :-

माहिल अपने भाई व पिता के अपमान का बदला लेने की बात सोच रहा था । वह तुरन्त दिल्ली के लिए प्रस्थान कर देता है और पृथ्वीराज से सारा समाचार कहता है । पृथ्वीराज माहिल के खास रिस्तेदार थे, क्योंकि माहिल की दूसरी बहिन अगमा पृथ्वीराज के साथ ब्याही गई थी और इस प्रकार पृथ्वीराज माहिल के बहनोई लगते थे । माहिल उनसे सहायता की मांग करता है । वह कहता है कि- राजा परमाल ने अचानक महोबा पर चढ़ाई कर दी है । वे कहते हैं कि महोबा, कन्नौज की रियासत है । बकाया कर की रकम तुरन्त अदा करने का आग्रह कर रहे हैं । शक्ति का परिचय देकर मल्हना से ब्याह करना चाहते हैं ।

माहिल की इस प्रकार की बातें सुनकर पृथ्वीराज क्रोधित हो जाते हैं और अपने सैन्यबल के साथ महोबा की ओर, माहिल की मदद हेतु प्रस्थान कर देते हैं । उधर परमाल को जासूसों द्वारा समाचार मिलता है कि शब्दबेध चौहान माहिल की मदद करने के लिए रणक्षेत्र में आ रहे हैं । अतः परमाल अपनी सेना को सावधान करने हेतु मंत्री को आदेश देते हैं । आप स्वयं वीरभद्र हाथी को सजवाकर अपनी सवारी बनाते हैं । इस प्रकार परमाल की सेना पिथौराराय की सेना का बेफिक्री से सामना करने के लिए तैयार थी । भाला, बरछा और तोपों का भीषण युद्ध आग उगल रहा था । कभी युद्ध के भेंट हो रहे थे । पृथ्वीराज अपने शब्दबेधी बाणों का प्रहार कर रहा था तो राजा परमाल अपने दैवीय खाड़े [तलवार] से दुश्मनों के सिर काट-काटकर पहाड़ बना रहे थे । पृथ्वीराज के युद्ध-कौशल और वीरता से परमाल की सेना के पैर उखड़ने लगे । उनका हाथी भीषण बाणों की बौछार से जखमी हो गया । तब राजा परमाल

को अत्यधिक चिन्ता हुई । अब उन्होंने चितरंगिनी घोड़ी को मंगवाया और उस पर सवार होकर युद्ध करने लगे । घोड़ी की कलाबाजी ने पृथ्वीराज के छक्के छुड़ा दिए । पृथ्वीराज का पीलवान [हाथी-चालक] मारा गया । तब उन्हें पश्चाताप हुआ कि वे व्यर्थ में माहिल की बातों में आकर युद्ध-भूमि में आ धमके । पृथ्वीराज ने परमाल से क्षमा माँगी और दिल्ली के लिए वापस लौट गए । परन्तु पृथ्वीराज को बार-बार अपने अपमान की याद आ रही थी । राजा परमाल ने मंत्री द्वारा अपने भाई पदमसिंह को चंदेरी से बुला भेजा और ब्याह की तैयारियाँ होने लगीं ।

परिमाल का ब्याह :-

पंडित चिंतामणि ने विवाह का शुभ मुहूर्त निकाला । उधर पदमसिंह विवाह का साज-सामान तथा वस्त्राभूषण आदि लेकर महोबा आ जाते हैं । चन्देल राजा अपने साज-सामान सहित सम्मान-पूर्वक महलों में आमंत्रित किए जाते हैं । राजा परमाल के नेगी रानी मल्हना के लिए वस्त्र-आभूषण लेकर पहुँचते हैं । मल्हना अपने मन में पहले ही संकल्प कर चुकी थी, कि जब चीर दक्खिनी [बाग में छोड़ा हुआ वस्त्र] नहीं मिलेगा, विवाह नहीं करेगी । अतः उसने अपनी सेविका से सूचना भेजी, कि जब तक चीर दक्खिनी चन्देल-नरेश नहीं देंगे, विवाह नहीं होगा । राजा परमाल मल्हना की चतुराई समझ गए । उन्होंने तुरन्त बाग में पाया हुआ वस्त्र मल्हना के महल में भेज दिया । वह चीर प्राप्त कर अतिशय प्रसन्न हुई । गौर वर्ण से युक्त राजकुमारी मल्हना और उसी के अनुरूप वस्त्राभूषण उसकी शोभा द्विगुणी कर रहे थे । राजा मंडप के नीचे जाते हैं । माहिल वहाँ भी कूटनीति का प्रयोग करता है । जिस पलंग पर राजा परमाल को बैठने को आसन दी गई थी, वह पलंग कच्चे धागे से बुना गया था तथा उसके नीचे गहरा खंदक खोद के तैयार कर दिया गया था । परंतु राजा बुद्धिमान थे वह माहिल की चाल को विफल कर देते हैं । बड़ी धूम-धाम से परमर्दिदेव का विवाह सम्पन्न होता है । तमाम लोक परंपराओं का निर्वाह किया जाता है । महलों में मंगलाचार व मंगलगीत गाए जाते हैं । नेगियों और याचकों को मनभावन नेग राजा द्वारा प्रदान किए जाते हैं । रानी मल्हना अपनी सहेलियों से गले मिलती है । सहेलियाँ अतीत को स्मरण करके विलाप करने लगती है । मल्हना रोती हुई पालकी में बैठती है, उस समय माहिल उसे प्रताड़ित करता है । कहता है :-

करी फजीहत है माहिल ने, बहिनी डारी नाक कटाय ।
बावनगढ़ की जो चौधर थी, सारी मिली खाक में जाय ।
मुँह नहिं देखब हत्यारी का, धेला देब एक भी नाय ।
कहु नहिं बोले बासुदेव हैं, मल्हना गई बहुत खिसियाय ।§1§

इस प्रकार मल्हना की पालकी राजा चंदेल अपने लश्कर में लाते हैं । लश्कर में पहुँचकर रानी मल्हना ने कहा- प्रिय, महोबा में मैं बचपन से खेली हूँ, मेरा लालन-पालन भी यहीं हुआ, अतः जन्मस्थान छोड़ने का मुझे अपार कष्ट हो रहा है । मैं अपनी सहेलियों से वादा करके आई हूँ कि विवाहोपरान्त भी यहीं रहूँगी । अतः यदि तुम मुझसे प्यार करते हो, तो यहीं रहो । राजा परमर्दिदेव अपनी रानी की बात स्वीकार कर लेते हैं । वैसे भी राजा जयचंद की आज्ञा का पालन परमाल को करना ही था । महोबा खाली करवाना था । अतः वे बासुदेव को पत्र लिखते हैं, कि महोबा कन्नौज राज्य की जागीर है । अतः तुरन्त महोबा खाली करके अन्यत्र चले जाओ । मैं राजा जयचन्द का नायब हूँ । संदेशवाहक पत्र लेकर राजा बासुदेव के पास जाता है । पत्र पढ़कर वे भौचक्के हो जाते हैं । अन्त में विचार करते है कि- मैं अपनी जागीर को सहज में नहीं दूँगा । जीना-मरना तो क्षत्रिय-धर्म है । अतः वह अपनी सेना लेकर दोनों पुत्रों सहित युद्ध भूमि में आ जाते हैं । दोनों ओर से भयंकर गोलाबारी और तलवारों व भाला-बरछों का युद्ध होता है । परमाल के मंत्री चिन्तामणि राजा बासुदेव का, पदमसिंह भूपतिसिंह का, तथा चन्देल स्वयं माहिल का सामना करते हैं । युद्ध में मंत्री चिंतामणि वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं । अब राजा परमाल को अत्यधिक क्रोध आता है और वह दुश्मन पर टूट पड़ते हैं । वह बासुदेव को भला-बुरा सुनाते हैं । अन्त में अपने खाँड़े के प्रहार से बासुदेव का सिर धड़ से अलग कर देते हैं । राजा पदमसिंह भूपतिसिंह को बन्दी बना लेते हैं । अब माहिल अधिक भयभीत हो जाते हैं । माहिल राजा परमाल की अधीनता स्वीकार कर लेते हैं । इस प्रकार महोबा पर चन्देल का कब्जा हो जाता है । वह कन्नौज में राजा जयचंद को सूचित कर देते हैं कि महोबा पर आपकी विजय हुई है । विजय का समाचार पाकर जयचंद अत्यधिक प्रसन्न होते हैं ।

राजा परमाल रानी मल्हना के साथ महोबा नगर में निवास करने लगते हैं ।

---

§1§ परिमाल का ब्याह - अमोलसिंह, पृ. 42.

MEHTA LIBRARY 51 University of Baroda

राजा चन्देल ने आसपास के राजाओं को बुलाकर उनसे बकाया कर वसूल करके, कनौज के खजाने में भिजवा दिया । राजा चन्देल ने महोबा की गद्दी संभाल ली और राजकाज सुचारु रूप से चलने लगा । भूपति सिंह के निवेदन पर परमर्दिदेव ने जगनेरी का इलाका भूपति सिंह को दे दिया तथा माहिल को उरई में नया किला बनाकर रहने की आज्ञा दे दी । माहिल को यह दुख था कि उसके पिता की जागीर में परमाल अनधिकृत रूप से राज्य कर रहे थे । अतः उसने परमाल की बात का प्रतिरोध किया, परन्तु काम बनने को नहीं था । उसे मजबूरी में उरई जाने के लिए तैयार होना पड़ा । परन्तु उसने राजा परमाल से यह वचन ले लिया कि वे उसकी चुगली पर ध्यान नहीं देंगे । माहिल बड़ी से बड़ी चुगली भी करेगा तो वह उसे क्षमा कर देंगे । इस प्रकार माहिल उरई में किला बनाकर रहने लगते हैं । पद्मसिंह चन्देरी चले जाते हैं । राजा परमाल अपनी बहिन नागमती का विवाह अरगलगढ़ करते हैं । परमर्दिदेव ने अपने शासनकाल में कालिंजर का किला बनवाया तथा उसकी रक्षा के लिए बड़ी-बड़ी तोपें बुर्जों पर रखवा दी । मनियादेव की मूर्ति की स्थापना की तथा किले में विशाल शिव-लिंग स्थापित किया ।

मनियादेव की मूरत उनकी कुल देवी की मूरत है जो आज भी भग्नावशेष में देखी जा सकती है । कुछ समय बाद भूपति सिंह [माहिल के छोटे भाई] की मृत्यु हो गई तब परमाल ने जगनेरी की जागीर अपनी बहिन को दे दी और उनका भानजा जगनायक वहां राज्य करने लगा ।

<u>परमाल का खाँड़ा पूजकर रखना :-</u>

राजा परमाल ने अपने समय के बड़े-बड़े राजाओं को परास्त कर दिया था, ऐसा माना जाता है । बावनगढ़ में किसी राजा की क्षमता नहीं थी, कि वह आकर परमाल का सामना कर सके । इस प्रकार अजातशत्रु बनकर राजा परमाल रानी मल्हना सहित महोबा में राज भोग में आनंदरत थे । धन-दौलत की कोई कमी नहीं थी क्योंकि पारस बथिया रानी मल्हना को प्राप्त थी, जो लोहा छूते ही उसे सोना बना देती थी । इस प्रकार नगर महोबा वैभव सम्पन्न था । प्रजा में सुख का वातावरण व्याप्त था ।

संदर्भ : बड़ा आल्हखंड – पं. महावीरप्रसाद जी.

अपने शासनकाल में उन्होंने अनेक तालाब बनवाए । इस प्रकार राजा सहित प्रजा शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रही थी । अमरगुरु की आज्ञा मानकर (अमरगुरु चन्देल के कुलगुरु थे) राजा परमाल ने ढाल व खाँडे की पूजा करके उनका परित्याग कर दिया और प्रतिज्ञा की, कि अब वे भविष्य में तलवार ग्रहण नहीं करेंगे । माहिल को जब यह पता चला कि राजा परमर्दिदेव ने अस्त्र त्याग कर दिया है, तो उसे अपने अपमान की याद आई और उसने दिल्ली जाकर पृथ्वीराज को सारा हाल सुनाया । माहिल की चुगली से पृथ्वीराज प्रभावित हुए । वे स्वयं भी अपमानित थे । अतः उन्होंने महोबा पत्र लिख भेजा कि- परमाल दिल्ली आकर महोबा का कर जमा करदें । अन्यथा महोबा लूट लिया जाएगा । पृथ्वीराज की गर्व भरी बात से राजा परमाल अत्यधिक आक्रोश में आ गए, परन्तु उन्होंने तो शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा कर ली थी । अतः शब्दवेद चौहान की बात उन्हें स्वीकार करनी पड़ी । राजा परमाल ने भविष्य को भविष्य के ऊपर छोड़ दिया ।

चूँकि आल्हखंड लोक वाणी में सुरक्षित लोककाव्य है, अतः समयानुसार वर्णनाओं में कल्पना व मिश्रण तथा ह्रास संभव है । अमोलसिंह स्वयं लिखते हैं :-

गलती होय जहाँ पर श्रोतहु, पढ़िकै लीजौ तहाँ सँभार ।
जस सुन पाई गाय सुनाई, है कछु नहीं लाग हमार ।(1)

संयोगिता हरण (पृथ्वीराज एवं जयचंद की लड़ाई) :-

राजा अजयपाल राठौर वंश के एक महा पराक्रमी राजा माने जाते हैं । इनके पुत्र का नाम वेनि चक्कवे था । वेनि चक्कवे के दो पुत्र हुए- जयचंद और रतीभान । यह दोनों भी अपने वंश परम्परा के वीरों की तरह अत्यन्त पराक्रमी थे ।

एक दिन राजा जयचन्द अपनी कचहरी में विराजमान थे । नर्तकियाँ नृत्य कर रहीं थीं । दरबार में बड़े-बड़े वीर बैठे हुए नृत्य का आनंद ले रहे थे । मनोरंजन समाप्त होने के बाद राजा जयचंद के मन में विचार आया कि अब संयोगिता (जयचंद की पुत्री) विवाह योग्य हो गई है । उन्होंने अपने मंत्री से सलाह की । मंत्री ने कहा, कि महाराज संयोगिता का स्वयंवर कीजिए । मंत्री की सलाह के अनुसार सभी कुलीन राजाओं को स्वयंवर का निमंत्रण भेजा गया, परन्तु दिल्ली-नरेश पृथ्वीराज को आमंत्रित

---

(1) परिमाल का ब्याह - अमोलसिंह, पृ. 48.

नहीं किया गया । पृथ्वीराज से जयचन्द के संबंध अच्छे नहीं थे । संयोगिता ने अपनी परिचारिका द्वारा पृथ्वीराज की वीरता एवं सौन्दर्य के बारे में सुन रखा था, अतः उसने मन ही निश्चय कर लिया था, कि यदि वह विवाह करेगी तो केवल पृथ्वीराज के साथ । अन्यथा जीवन पर्यन्त कुमारी रहेगी ।

सभी आमंत्रित राजा कन्नौज-दरबार में निश्चित तिथि को पहुँच गए । पृथ्वीराज चौहान के स्थान पर उनकी प्रतिमा दरवाजे के पास स्थापित कर दी गई । संयोगिता को दरबार में जब बुलाया गया, तो वह अपनी सहेलियों के साथ वरमाला लेकर आई । उसने संपूर्ण राजाओं को देखा, परन्तु किसी के गले में वरमाला नहीं डाली । अन्त में जब दरवाजे पर उसने पृथ्वीराज की प्रतिमा देखी, तो उसी को वरमाला अर्पित करदी । महाकवि चन्दवरदाई भी वहां उपस्थित थे । यह देखकर वह बहुत प्रसन्न हुए । समस्त आमन्त्रित सम्राट अत्यधिक क्षुब्ध हुए और उन्होंने अपना घोर अपमान समझा । सभी राजागण अपने-अपने राज्यों की ओर चले गए ।

स्वयंवर के समापन के उपरान्त जयचंद ने चन्दवरदाई को बुलाया और उनसे पृथ्वीराज के शौर्य और सौन्दर्य आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की । उन्होंने यह भी कहा कि, वह पृथ्वीराज चौहान को देखना चाहते हैं ।

चन्द्रभाट ‡चन्दवरदाई‡ दिल्ली जाकर पृथ्वीराज से सारा हाल कह सुनाते हैं । वह अत्यन्त प्रसन्न होते हैं तथा चन्द के साथ कन्नोज की ओर प्रस्थान कर देते हैं। प्रस्थान करते समय चौहान-नरेश सारा समाचार अपने चाचा कान्हदेव को सुनाते हैं ।

चन्द्रवरदाई के साथ महाराज पृथ्वीराज चौहान कनवज दरबार में पहुँचते हैं । दरबार खचा-खच भरा हुआ था । जयचंद चन्द्रभाट का यथोचित स्वागत करते हैं, परन्तु अज्ञान में पृथ्वीराज की उपेक्षा की जाती है । जयचंद के दरबार की साज-सज्जा देखकर चौहान दंग रह जाते हैं । चन्दवरदाई जयचंद से निवेदन करते हैं कि महाराज दिल्ली-पति आए हुए हैं । चन्द्रभाट की बात सुनकर जयचंद उन्हें बागों में ठहराने की उचित व्यवस्था कर देते हैं । प्रातः काल जयचंद पृथ्वीराज के अनुरूप उपहार लेकर बागों में उनसे मिलने जाते हैं । पृथ्वीराज पान की बीड़ा जयचंद के हाथ में देकर दबा देते हैं, जिससे उनके खून बहने लगता है । जयचंद क्रोधित हो जाते हैं ।

संदर्भ : बड़ा आल्हखंड - पं. सीताराम जी, पृ. 6, 7, 8.

संयोगिता का बागों में पृथ्वीराज से मिलना :-

जब संयोगिता को पता चलता है, कि दिल्ली-नरेश पृथ्वीराज चौहान कन्नौज आए हुए हैं, तो वह पालकी में बैठकर अपनी परिचारिकाओं के साथ बागों की ओर प्रस्थान करती है। बागों में पहुँचकर पृथ्वीराज को प्रणाम करती है और अपने संकल्प से अवगत कराती है।

शब्दवेधी चौहान उसे धैर्य बंधाते है। वह कहते है, कि प्रिय, तुम चिन्ता न करो। मैं तुम्हें दिल्ली अवश्य ले जाऊँगा। इधर राजा जयचंद अपने लश्कर को युद्ध हेतु तैयार होने का आदेश दे देते हैं। उधर पृथ्वीराज संदेशवाहक को बुलाकर कान्हदेव के नाम पत्र लिखकर दिल्ली से हरीसिंह एवं अन्य खास-खास वीरों को बुलावा भेजते हैं।

चन्दवरदाई के साथ पृथ्वीराज घोड़े पर सवार होकर नदी के किनारे उसे पानी पिलाने जाते हैं। महलों से कुमारी संयोगिता देखती है, तो अपनी बाँदी द्वारा उन्हें महलों में बुलाती है। वहां वह कहती है, कि मेरे पिता जयचंद साधारण योद्धा नहीं है। उन्हें जीतना भी साधारण बात नहीं है। अतः तुम बिना युद्ध किए ही मुझे ले चलो, क्योंकि वह पूर्ण रूप पृथ्वीराज पर मुग्ध हो चुकी थी। पृथ्वी उसे आश्वासन देते हैं कि युद्ध में वह अवश्य ही विजय प्राप्त करेंगे और उसे दिल्ली ले जाएंगे।

दिल्लीपति और कन्नौज-नरेश का संग्राम :-

पृथ्वीराज की सूचना पाकर दिल्ली से कान्हदेव, हरीसिंह, मकुन्दसिंह एवं अन्य महत्वपूर्ण वीरों सहित ससैन्य कन्नौज पहुँच जाते हैं। उधर जयचंद का लश्कर समरभूमि में उपस्थित हो जाता है।

सर्वप्रथम हरीसिंह और धीरजसिंह का युद्ध होता है। हरीसिंह पृथ्वीराज चौहान का पुत्र था तथा धीरज कन्नौज सेना का महत्वपूर्ण योद्धा था। दोनों में भीषण युद्ध होता है, अन्त में धीरजसिंह वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं। राजा जयचंद जब युद्ध का समाचार और धीरजसिंह की मृत्यु का समाचार सुनते हैं, तो दुखी होते हैं। वह निश्चय करते है कि संयोगिता का डोला रणक्षेत्र में रख दिया जाएगा। जिसकी युद्ध में विजय होगी, उसी का डोला पर अधिकार होगा। वह डोला की

रक्षा में रायलंगरी तथा हमां-जमां नामके वीरों को नियुक्त करते हैं । विशाल सेना के साथ संयोगिता की डोली रणक्षेत्र में पहुँचती है ।

रायलंगरी {कन्नौज सेना का नायक} रणभूमि में घोषणा करता है, कि संयोगिता की डोली रणक्षेत्र में उपस्थित है, जिसकी युद्ध में विजय होगी, उसी का डोली पर अधिकार होगा । युद्ध आरम्भ होता है । हमां-जमां हरीसिंह का सामना करते हैं । दोनों वीर भयंकर युद्ध कर रहे थे । कभी डोली को हरीसिंह ले जाते, तो कभी हमां-जमां अधिकार कर लेते । इस प्रकार संयोगिता की डोली खून के फव्वारों से रंग-बिरंगी हो गई । अन्त में हमां-जमां युद्ध में शहीद हो गए ।

अब रायलंगरी और हरीसिंह का द्वन्द युद्ध होता है । रायलंगरी की ललकार और युद्ध कला से हरीसिंह की सेना भागने लगी । हरीसिंह ने उन्हें उदबोधित किया । दोनों विजय प्राप्त कर डोली पर अधिकार कर लेना चाहते थे । इस प्रयास में जी-जान लगाकर युद्ध हो रहा था । चौहान अपनी शान की मर्यादा हेतु संयोगिता की डोली पर अधिकार करने का प्रयास कर रहे थे । रायलंगरी राठौर वंश की मर्यादा बचाने का प्रयास कर रहे थे । दोनों आन की रक्षा में लय थे । भयंकर युद्ध करते-करते दोनों वीर भारतमाता की गोदी में सो जाते हैं ।

जब जयचंद को युद्ध का समाचार मिलता है कि युद्ध में हमां,जमां एवं रायलंगरी वीरगति को प्राप्त हो गए हैं, तो वे स्वयं युद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं । अपनी सेना सजाकर, अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित वे रणखेत में उपस्थित हो जाते हैं । उधर पृथ्वीराज कान्हदेव से निवेदन करते है, कि चाचा आप जयचंद का सामना कर डोला दिल्ली में पहुँचाएं । जयचंद कोई साधारण योद्धा नहीं था । पृथ्वीराज की ओर से कुंजरसिंह नाम का भी एक पराक्रमी योद्धा युद्ध कर रहा था । पुनः संयोगिता की डोली रणखेत में रखकर, जयचंद घोषणा करते हैं कि युद्ध में जिसकी विजय होगी संयोगिता की डोली पर उसी का अधिकार होगा ।

कान्हदेव तथा जयचंद अपनी-अपनी शान व आन के लिए पूर्ण शक्ति के साथ युद्ध कर रहे थे । कभी डोली पर कान्हदेव का अधिकार हो जाता, तो कभी जयचंद का । कभी जयचंद की सेना पीछे हट जाती तो कभी दिल्ली-नरेश चौहान की । इस प्रकार तलवारों व तेगों की खटाखट - तीरों व बरछों की सनसनाहट से आकाश गूंज

रखा था । तोपों से अग्नि की लपटें निकल रही थी । आकाश धुआँ से आच्छादित हो गया था । कान्हदेव के प्रहार जयचंद को उत्तेजित कर रहे थे, तो जयचंद के प्रहार कान्हदेव को आक्रोशयुक्त कर रहे थे । ऐसी स्थिति में राठौर वंशी सेना के पैर उखड़ गए । कान्हदेव संयोगिता की डोली लेकर दिल्ली की ओर रवाना हो गए । उनकी सेना में विजय की बिगुल बजने लगा ।

रतीभान सिंह का युद्ध :-

रतीभान, जयचंद के छोटे भाई थे, जो पराक्रम में अपने आप में एक विशाल थे । जब उन्हें समाचार मिला कि संयोगिता की डोली दिल्ली-पति पृथ्वीराज चौहान ले गए है । युद्ध में जयचंद की पराजय हो गई है, तो उन्हें राठौर वंश की मर्यादा की याद सताने लगी । अतः राजा रतीभान विशाल लश्कर लेकर तुरन्त ही पृथ्वीराज की सेना से युद्ध करने के लिए दिल्ली की ओर रवाना हो गए ।

जब रतीभान युद्ध के लिए रवाना होना चाहते है, तो अपशकुन होता है । उनके मन्त्री उन्हें सलाह देते हैं कि वे जल्दी में युद्ध के लिए तैयार होकर न जाएं । परन्तु रतीभान वीर योद्धा थे तथा कुल-मर्यादा का प्रश्न-चिह्न लगा हुआ था । अतः वह मंत्री की बात व सुझाव का प्रतिवाद करते हैं । तुरन्त ही डोली के पास पहुँच जाते हैं । वह कान्हदेव को भीषण ललकार मारते हैं और संयोगिता की डोली वापस करने को कहते हैं ।

दिल्ली-नरेश की सेना की ओर से मुकुन्दसिंह रतीभान का सामना करते हैं । दोनों में घनघोर युद्ध हुआ और अन्त में मुकुन्दसिंह रतीभान की तलवार के भेंट हो जाते हैं । मुकुन्दसिंह की मृत्यु का समाचार सुनकर पृथ्वीराज दुःखी होते हैं । वह कान्हदेव से निवेदन करते हैं, कि अब चौहान वंश की लज्जा आपके हाथों में है । कान्हदेव, पृथ्वीराज को ढाढस बंधाते हैं तथा रतीभान का सामना करने के लिए तैयार होते हैं । कान्हदेव और रतीभान में भयंकर युद्ध होता है । कान्हदेव, रतीभान की तलवार से घायल हो जाते हैं । कान्हदेव के सामने चौहान वंश की मर्यादा का प्रश्न था । वह तुरन्त पृथ्वीराज से कहते हैं कि—

तब ललकारो कान्हदेव ने, पृथ्वीराज से कही सुनाय ।
डोला लौटे जो कनवज को, बुदि है सात साखि को नाम ।

दागु लागि है रजपूती में, और चौहानी जाय नलाय ।
टाके देदेउ तुम मस्तक के, तौ बैरी कों देउ गिराय ।
एक घड़ी केरे जीवन में, डोला दिल्ली देउं पठाय ।§1§

इस प्रकार अपने वंश की मर्यादा के खातिर कुर्बानी देने वाले कान्हदेव पुनः रतीभान का सामना करते हैं । दोनों योद्धा एक से एक बढ़कर थे । लड़ते-लड़ते दोनों रणक्षेत्र में हमेशा के लिए सो जाते हैं ।

अवसर पाकर पृथ्वीराज संयोगिता की डोली लेकर दिल्ली के फाटक तक पहुँच जाता है । अपने सहोदर की मृत्यु का समाचार पाकर जयचन्द बहुत दुखी होते हैं और पुनः चौहान से युद्ध करने के लिए प्रस्थान कर देते हैं । पृथ्वीराज की सेना के तीन महान योद्धा शहीद हो चुके थे । इधर कनवज-नरेश की सेना के चार प्रमुख वीरों को रणचंडी निगल चुकी थी । दिल्ली फाटक पर पहुँचकर जयचंद भाषण ललकार मारते हैं । अब पृथ्वीराज स्वयं जयचंद का सामना करने के लिए मजबूर थे । जयचंद जैसे पराक्रमी योद्धा का सामना करना साधारण बात न थी । अतः पृथ्वीराज हाथ में लालकमान धारण कर लेते हैं । जयचंद अपनी दिव्यीय खाँड़ा ग्रहण कर लेते हैं । संयोगिता यह देखकर भयभीत हो जाती है । वह सोचने लगती है, कि अब किसी एक की मृत्यु निश्चित है । इधर सुहाग का प्रश्न था, तो उधर पिता की ममता का । अतः वह हाथ जोड़कर अपनी डोली से बाहर आती है और पृथ्वीराज से कहने लगती हैं, कि—

हाथ जोड़ संयोगिन बोली, स्वामी सुनो हमारी बात ।
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं है, जो दादा पर डारो हाथ ।
खाँड़ा देखो जब ददुआ थे, तब उनहूँ से कही सुनाय ।
बात हमारी तुमहूँ मानो, ददुआ बार-बार बलिजाऊं ।
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं है, जो राजा पर डारो हाथ ।§2§

पृथ्वीराज अपने मन ही मन संयोगिता की बात पर विचार करते हैं और अपनी लाल-कमान रख देते हैं । उधर जयचन्द भी सोचते हैं कि होनहार प्रबल होता है । आखिर बेटी का विवाह तो करना ही होगा । अतः वह भी संयोगिता की बात को मानकर अपना खाँड़ा रख देते हैं । इसी समय चन्दभाट §चन्दवर दाई§ वहाँ आ जाते हैं और

---

§1§ बड़ा आल्हखंड – पं. महावीर प्रसाद जी, पृ. 22.
§2§ संयोगिता स्वयंवर – अमोलसिंह, पृ. 38.

जयचंद से कहने लगते हैं, कि—

चन्दभाट आगे को बढ़ि गए, औ जयचंद से कही सुनाय ।
जितने शूर हते दिल्ली के, सो सब तुमने दिये गिराय ।
तुमरी दूसरिया कोउ नाहीं, सो तुम सुनो कनौजी दराय ।
अब तुम छोड़ौ पृथ्वीराज को, कीरति चली अगारू जाय ।
इतनी सुनिकै राजा जयचंद, कनवज कूंच दियो करवाय ।।1।।

इस प्रकार चन्दबरदाई की बात मानकर जयचंद कन्नौज के लिए वापस प्रस्थान कर देते हैं । संयोगिता और पृथ्वीराज दोनों रंगमहल में आनंद पूर्वक रहकर विलासिता पूर्ण राजसी जीवन व्यतीत करने लगते हैं ।

महोबा की लड़ाई :-

महोबा की प्रथम लड़ाई में जम्बे-कुमार करिंगाराय (करिया) की लूट का वर्णन किया गया है । परमाल रासो (आल्हखंड) में यह दूसरी लड़ाई के रूप में वर्णित की गई है ।

माड़ौ गढ़ में जम्बे नाम के राजा राज्य करते थे, उनके पुत्र का नाम करिंगाराय था, जो अत्यन्त बहादुर और शक्तिशाली था । एकबार जेठ माह के दशहरा का गंगा-स्नान करने का पर्व आया । करिया ने अपने पिता से गंगा-स्नान करने की आज्ञा मांगी । पहले तो उन्होंने इनकार कर दिया, कि वह जयचंद की सीमा है । वह तुम्हें कैद करवा लेंगे क्योंकि हमने बारह वर्ष से कर का पैसा अदा नहीं किया है । बाद में ज्यादा आग्रह करने पर जम्बे ने राजकुमार को गंगा-स्नान करने की अनुमति दे दी । वह अपना लश्कर सजाकर गंगा-स्नान हेतु चल दिया । गंगा-घाट पहुँचकर (जाजमऊ घाट) उसने स्नान किया । मेला में अनेक देशों के राजा आए हुए थे ।

गंगा स्नानोपरान्त करिया मेला में अपनी बहिन के लिए उपहार खरीदने हेतु घूम रहा था । उसी समय माहिल मामा से मुलाकात हो जाती है । जब माहिल को कारण का पता चलता है, तो वह कहता है, कि- महोबा में राजा परमाल राज्य करते है । उसकी पत्नी और मेरी बहिन मल्हना है । उसके पास नौलखा हार है । तुम महोबा पर चढ़ाई करके लूट करवा लो और बहिन के लिए मल्हना से नौलखा हार

---

(1) संयोगिता हरण - अमोलसिंह, पृष्ठ-80.

छीन लो । यह तुम्हारी बहिन के लिए उपयुक्त उपहार होगा । तुम कोई साधारण व्यक्ति नहीं हो । राजा के राजकुमार हो । माहिल ने यह भी बताया है, कि राजा परमाल ने अस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा की है । इसलिए महोबा लूटना आसान है ।

माहिल की चुगली का करिया पर पूर्ण असर हो जाता है । वह लश्कर सहित महोबा की ओर प्रस्थान कर देता है । महोबा के फाटक पर वह संतरी को चेतावनी देता है तथा फाटक खोलने का आदेश देता है । जब संतरी फाटक खोलने से इनकार करता है, तो वह फाटक तोड़ने की तैयारी कर देता है ।

संयोग की बात यह थी, कि बक्सर से रहिमल, टोडर, दस्सराज तथा बच्छराज के बनाफर वीर, ताल्हन सैयद के नाती तथा पुत्रों सहित वहीं विश्राम कर रहे थे । कारण यह था, कि यह वीर, जयचंद के दरबार में शिकायत हेतु कन्नौज जा रहे थे । बक्सर में कोई आपसी झगड़ा हो गया था । रात्रि हो जाने के कारण इन्होंने संतरी से आज्ञा लेकर महोबा में विश्राम करने का निश्चय किया था । करिया के अन्याय को देखकर ताल्हन सैयद (बनारस वाले) तथा बनाफरों को क्रोध आ गया । उन्होंने सोचा, कि- हम लोगों ने महोबा का नमक खाया है तथा पानी पिया है । इसलिए महोबा की रक्षा प्राण रहते हुए अवश्य करना चाहिए । यह सोचकर चारों वीर ताल्हन सैयद के पुत्र और नातियों सहित करिया की सेना पर टूट पड़ते हैं । इनकी भीषण मारों से करिया की सेना के पांव उखड़ जाते हैं और वह जान बचाकर माड़ौं की ओर भाग जाता है ।

जब राजा परमाल या परमर्दिदेव को यह समाचार मिलता है, कि फाटक पर भयंकर युद्ध हुआ है और बनाफर वीरों ने हमारी मदद की है, तो वे उनसे मिलने आते हैं । वह सम्मान सहित उन्हें दरबार में ले जाते हैं । उनकी कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उनका उचित सम्मान करते हैं तथा ताल्हन सैयद को अपनी सेना का सेनापति नियुक्त कर देते हैं । दस्सराज और बच्छराज को भी उचित पद प्रदान करते हैं ।

परमर्दिदेव की रानी मल्हना बड़ी ही कुशाग्र बुद्धि की थी । उसने एक दिन राजा से कहा कि यह बड़े योद्धा हैं । यदि इनका विवाह करवा दिया जाए, तो यह महोबा में रुक जाएंगे और मुसीबत में हमारी मदद करेंगे । राजा परमाल को यह सुझाव अच्छा लगता है । महोबा घराने में ही देवल और ब्रह्मा नामकी दो बहिनें थी ।

इन दोनों का विवाह दस्सराज और बच्छराज के साथ संपन्न हो जाता है। महलों में खुशियां मनाई जाती हैं। रानी मल्हना देवल को अपना नौलखा हार उपहार में दे देती है। इस प्रकार परमाल की अन्य रानियां भी उन्हें अनेक प्रकार के उपहार भेंट करती हैं। सभी राजमहल में खुशी-खुशी रहने लगते हैं।

एक दिन मल्हना, परमाल को नया महल बनाने का सुझाव देती है। वह दशपुरवा में एक महल तैयार करवा देते हैं और दस्सराज, बच्छराज वहां रहने लगते हैं। यह स्थान महोबा से दो कि.मी. दूर था। दस्सराज और बच्छराज परमाल के दरबार का कार्यभार ग्रहण करके उसकी देखरेख करने लगे तथा ताल्हन सैयद सैन्य संचालन करने लगे। एक दिन सैयद चाचा ने परमालिक से पूछा, कि— महाराज, आप हथियार ग्रहण क्यों नहीं करते हैं ? तब उन्होंने बताया, कि मैंने अपने शासन काल में सभी राजाओं को पराजित कर दिया। जब यह भारत वर्ष मेरे लिए अजातशत्रु हो गया, तो अमरगुरू की आज्ञा मानकर, मैंने खाँड़ा सागर में धोकर रख दिया और हथियार ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा कर ली है। समय-समय पर आप जैसे उदार पुरूष हमारी मदद करते हैं। आगे हरि मालिक है।

दशपुरवा दस्सराज व बच्छराज की राजधानी बन जाती है। वहीं एक साल के उपरान्त देवल के गर्भ से आल्हा का जन्म होता है, जो धर्मराज के अवतार माने जाते हैं। कन्नौज में रानी तिलका के गर्भ से लाखन राना का जन्म होता है, जो नकुल के अवतार तथा मल्हना के ब्रह्मा का जन्म होता है, जो अर्जुन के अवतार माने जाते हैं। उसी समय देबा का जन्म होता है, जो बड़ा पराक्रमी वीर था। यह परमाल के पुरोहित का पुत्र था। ताल्हन सैयद ने परमाल को आश्वासन दिया, कि तुम बेफिक्र राज्य करो। जहां हमारी आवश्यकता पड़ेगी, मैं जान की बाजी लगाकर राज्य की रक्षा करूँगा।

समयानुसार ताल्हन सैयद को आवश्यक कार्य हेतु बनारस जाना पड़ा। अब माहिल को पता चला कि ताल्हन सैयद अपने वीर पुत्रों एवं पोतों सहित बनारस गए हुए है, तो उसने माड़ौ जाकर जम्बे पुत्र को महोबा की लूट करने के लिए प्रेरित किया। राजा जम्बे के मना करने पर भी वह न माना और आधी रात्रि के समय दशपुरवा पर धावा बोलकर सोते हुए दस्सराज और बच्छराज को कैद कर लिया। देवलरानी से नौलखा हार छीन लिया। हाथी पचशावत, घोड़ा पपीहा, लाखा पातुर आदि जो

भी पाया सब लूटकर माड़ौं की ओर प्रस्थान कर गया । वहाँ दस्सराज और बच्छराज को जिन्दा कोल्हू में पिलवा दिया और उनके सिर काटकर बरगद से लटका दिए ।

प्रातः काल जब परमाल को सारी घटना का पता चलता है, तो महलों में हाहाकार मच जाती है । देवल, ब्रह्मा, मल्हना आदि रानियाँ बिलख-बिलख कर क्रन्दन करने लगती हैं । समाचार पाकर ताल्हन सैयद बनारस से वापस आ जाते हैं । संकट की भीषण घड़ी में दसपुरवा में त्राहि-त्राहि मची हुई थी । ताल्हन सैयद दस्सराज और बच्छराज की वीरता का बखान करके विलाप कर रहे थे । परमाल सभी रानियों को धैर्य प्रदान कर रहे थे । सभी करिया को उसके दुष्कर्म के लिए धिक्कार रहे थे । ताला सैयद ने कहा, कि- अभी माड़ौं पर चढ़ाई करना भी उचित नहीं है । माड़ौ का किला लोहे का बना हुआ है । वहाँ तक पहुँचने के लिए विशाल बबूल का जंगल है । समय की प्रतीक्षा करना ही उचित समझा गया ।

तीन मास के अन्तराल के बाद देवल के ऊदल का जन्म हुआ, जो भीमसेन का अवतार माना जाता है । ब्रह्मा के गर्भ से सुलखान का जन्म हुआ । मलखान का जन्म आल्हा के जन्म के कुछ ही मास बाद हुआ था । उधर मल्हना के गर्भ से रणजीत {रंजित} जन्म लेता है । देवल और ब्रह्मा पुत्र-जन्म को अपशकुन समझने लगी । उनका विचार था, कि यह पुत्र भाग्यहीन हैं । अतः उन्होंने बांदी {परिचारिका} से कहा, कि- इन्हें जंगल में जिन्दा ही फिकवा दीजिए । परिचारिका {दासी} ने उन्हें बार-बार प्रबोध किया, परन्तु वे न मानी । तब दासी परमाल के महलों में आई और रानी मल्हना को सारी कहानी सुनाई । ऊदल तथा सुलखान के मुख पर अपूर्व तेज था । परमाल ने ऊदल का चौड़ा मस्तक और अच्छे भाग्य के लक्षण देखकर मल्हना से पालन-पोषण करने को कहा । इस प्रकार ऊदल मल्हना के महल में उसके स्तन का पान करके बड़े होने लगे ।

महलों में सातों बेटों- आल्हा, ऊदल, मलखान, देवा, ब्रह्मा, रणजीत और सुलखान का पालन-पोषण होने लगा । सभी दिन-दिन बढ़ रहे थे । राजा परमाल और मल्हना उनके क्रिया-कलाप देखकर मुदित होते थे । ताल्हन सैयद सभी राजकुमारों को शस्त्र-विद्या एवं युद्ध-कला की शिक्षा दे रहे थे । एक दिन सभी राजकुमार नाई के साथ दरबार में पहुँच गए । राजा ने सभी को प्यार कर वापस कर दिया । महलों में आने पर उन्होंने मल्हना को समझाया, कि तुमने उन्हें दरबार में

क्यों भेजा । नजर लग जाएगी । तब रानी जवाब देती है, कि दूध, पूत छिपाए से नहीं छिपते । आज यह महलों में हैं, कल शिकार खेलने जाएंगे ।

एक बार अमरगुरु (चंदेल के कुलगुरु) महलों में पदार्पण करते हैं । सभी रानियां व परमाल उनका उचित स्वागत करते हैं । देवल, ब्रह्मा व मल्हना सभी पुत्रों को उनके चरणों में समर्पित कर देती हैं और आशीर्वाद देने को कहती है । अमरगुरु यह देखकर प्रसन्न हो जाते हैं । ऊदल को देखकर, कहते हैं, कि यह बालक महान योद्धा होगा । कोई शूर इससे टक्कर नहीं ले सकेगा । यह अपने पिता का बदला भी लेगा । सबसे पहले गुरु, आल्हा को वरदान देते है, कि उन्हें समर में कोई भी नहीं जीत सकेगा । तत्पश्चात् ऊदल के शरीर पर हाथ फेरते हैं और उनका शरीर वज्र का कर देते हैं । उन्होंने ऊदल से कहा, कि– तुम्हारे शरीर पर हथियार/का असर नहीं होगा । मलखान के शरीर पर हाथ फेरा, तो उनकी देह भी वज्र की हो गई, परन्तु पैरों तक हाथ आते-आते ब्रह्मा ने उन्हें रोक दिया । उन्होंने गुरु से कहा, कि चेला के चरण-स्पर्श करना हमारे लिए पाप होगा । गुरु कहते हैं, कि रानी मलखान का संपूर्ण शरीर वज्र का हो गया, परन्तु इसके पैरों के तलुआ में काल है । जब पैरों के तले में शस्त्र लग जाएगा तभी इसकी मृत्यु होगी । यथा :–

हाथ फिराया नर मलखे पर, काया सबै वज्र होइ जाय ।
हाथ बढ़ावत लगे पांव पर, तब ब्रह्मा ने कही सुनाय ।
पांव न छुइये तुम चेला के, नहिं घटि जैहै धर्म हमार ।
यह सुनि बोले अमर गुरुजी, रानी सुनो बनाफर क्यार ।
सिगरी काया गई वज्र की, या के तलुअन में है काल ।
शस्त्र लागि है जब तलुवामें, तब न बचे तुम्हारो लाल ।(1)

इसके उपरान्त अमरगुरु ब्रह्मानन्द के शरीर को वज्र का बना देते हैं । यह कहते हैं, कि तुम्हारी मृत्यु पृथ्वीराज पुत्र ताहरसिंह के द्वारा ही होगी । अन्य योद्धा तुम्हारा बाल-बांका नहीं कर सकेगा ।

अमरगुरु सुलखे के शरीर को छूते हैं । उसे भी वज्र का शरीर होने का आशीष देते हैं और वरदान देते हैं, कि तुम्हारी मृत्यु का कारण मात्र धांधू बनेगा । तत्पश्चात

---

(1) महोबा की लड़ाई – अमोलसिंह, पृ. 42.

देवा और रंजीत की काया या देह भी वज्र की बनाकर व आशीर्वाद देकर वे अपने स्थान पर चले जाते हैं।

अब बालक बड़े होने लगते हैं, शिकार खेलने लायक उनकी आयु हो जाती है। रानी मल्हना और राजा परमाल अपने पुत्रों के क्रिया-कलाप और विकास को देखकर प्रसन्न होते थे। एक दिन मल्हनदे ने अच्छी जाति के घोड़े बालकों (राजकुमारों) को प्रदान किए और कहा, कि हिरन का शिकार कर लाओ। उन्होंने यह भी कहा, कि जो हिरन मार कर लाएगा, वहीं मेरा सर्वप्रिय बेटा होगा। दिए गए घोड़े उत्तर कोटि के थे ही, जिनके नाम- हरनागर, घोड़ा बेंदुला, घोड़ी कबूतरी, घोड़ा मनोरथा, घोड़ी हिरोंजिनि आदि।

सभी राजकुमार अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर शिकार खेलने के लिए जंगल की ओर प्रस्थान करते हैं। सायंकाल तक कोई हिरन दिखाई ही नहीं देता है, तो उन्हें अपनी माँ की बात याद आती है, क्योंकि उनकी प्रतिज्ञा पूरी नहीं हो पा रही थी। अन्त में एक हिरन ऊदल को दिखाई दिया। ऊदल ने घोड़ा दौड़ाया और हिरन का पीछा करते-करते वह उरई की ओर आ गए, जहाँ माहिल की राजधानी थी। हिरन माहिल के बगीचे घुस गया और वहीं कहीं छिप गया। हिरन खोजने के प्रयास में ऊदल ने सम्पूर्ण बगीचा नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। माली द्वारा मना करने पर उन्होंने उसे खरी-खोटी सुनाई। ऊदल अन्त में वापस महोबा आ जाते हैं। दूसरे दिन सभी राजकुमार- आल्हा, ऊदल, मलखे, देवा, ब्रह्मा, रंजीत और सुलखान पुनः शिकार खेलने जाते हैं और हिरन का सामूहिक शिकार करके लाते हैं। राजा परमाल और रानी मल्हना अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार राजकुमार प्रतिदिन शिकार खेलने जाने लगे। धीरे-धीरे उनकी वीरता और साहस का यश प्रजा में फैलने लगा।

<u>माड़ौं की लड़ाई :-</u>

माड़ौं गढ़ (मारवाड़) की लड़ाई परमाल रासो की सबसे महत्वपूर्ण लड़ाई है, जिसमें आल्हा-ऊदल आदि वीर जम्बे के राज्य पर आक्रमण करके अपने पिता का बदला लेते हैं। आल्हा, ऊदल, मलखान आदि की अनुपम एवं कौशल पूर्ण गाथाएँ इस संग्राम में समाहित हैं।

जब ऊदल बारह वर्ष के हो गए, तो जंगल में शिकार खेलने जाने लगे । एक दिन वह शिकार खेलते हुए माहिल की राजधानी उरई की ओर चल दिए । रास्ते में दो हिरन दिखाई दिए, जिनका पीछा करते-करते ऊदल माहिल के बाग में पहुँचे । हिरनों का शिकार किया, परन्तु माहिल के बगीचे के पेड़-पौधे टूट गए । माहिल के बाग-रक्षक ने ऊदल को मना किया परन्तु वह नहीं माने । वह माहिल के दरबार में गया तथा सारा हाल सुनाया । माहिल ने अपने बेटे अभयसिंह को भेजा । ऊदल और अभयसिंह में वाद-विवाद हो गया । अभयसिंह घायल हो जाता है ।

माहिल को जब यह पता चलता है, कि ऊदल ने अभयसिंह को घायल कर दिया है और बगीचा उजाड़ दिया है, तो वह अत्यन्त क्रोधित हो जाता है । पुत्र का उपचार करता है और अपनी घोड़ी पर सवार होकर महोबा की ओर रवाना हो जाता है । वह महोबा पहुँच कर चन्देल-नरेश के दरबार में उपस्थित होता है और राजा परमाल को सारा हाल सुनाता है । वह कहता है :-

बोले माहिल तब राजा से, तुम सुन लेउ चन्देल राय ।
तुमने पालों है ऊदल को, दूजी करी हमारे साथ ।
उरई केरी फुल बगिया को, ऊदल बर्द दिया करवाय ।
कब से जोरावरि ऊदल होइगे, कब से बाँधि लिए हथियार ।
× × ××× × ×
टंगी खोपड़िया दस्तराज की क्यों न लेय बाप का दाँव ।§1§

माहिल की बात सुनकर परमर्दिदेव ने कहा, कि तुम्हारा जो भी नुकसान हुआ है उसका मैं पूरा उत्तरदायी हूँ, परन्तु माड़ौ की चर्चा मत कीजिए । ऊदल अत्यन्त आक्रोशी है, यदि उसे पता चलेगा, तो वह तुरन्त माड़ौ पर चढ़ाई कर देगा । ऊदल वहीं कहीं थे । उन्होंने माहिल की आवाज सुन ली । अतः वह आग-बबूला हो गया । ऊदल कहने लगा, कि माड़ौ का राजकुमार कौन है ? जम्बे कौन हैं ? तथा मेरे पिता को किसने मारा है ?

राजा परमाल ऊदल के प्रश्नों का उत्तर न दे सके । माहिल भी कुछ न बोले, बल्कि कहा, कि अपनी माता से पूछो । ऊदल क्रोध के कारण लालिमा युक्त हो गया

---

§1§ मारवाड़ की लड़ाई - अमोलसिंह - पृ. 5, 6.

था । शरीर से पसीना निकल रहा था । क्रोध की भाव-भंगिमा लिए हुए माता देवल के महल में जाता है । सारे प्रश्नों का उत्तर चाहता है । पहले तो वह बताना नहीं चाहती है, क्योंकि उनका विचार था कि अभी ऊदल बारह वर्ष का है । युद्ध करने में कुशलता प्राप्त नहीं है । परन्तु जब ऊदल आत्महत्या हेतु तैयार हो जाते हैं तो उन्हें विवश होकर दस्सराज और बच्छराज की मृत्यु तथा करिंगाराय के दुष्कर्मों के बारे में बताना पड़ता है ।

अपने पिता की मृत्यु की सारी घटना तथा करिया द्वारा किए गए अकारण दुष्कर्म से ऊदल का खून खौलने लगता है और वह प्रतिज्ञा करने लगते हैं :-

तड़पे ऊदल तब माता से, तुम सुनि लेउ दिवलदे माय ।
बदलो लैहो मैं ददुआ को, माड़ौं खोदि करै हौं ताल ।
सीस काटिकै मैं करिया को, औ जम्बे को सीस उतारि ।
सो टंगवाय दे हौं महुबे में, दूनी लूटि लिहौं करवाय ।§1§

माता देवल ऊदल को मना करती हैं । वे कहती हैं, कि अभी तुम छोटे हो । कुछ समय बाद माड़ौं पर चढ़ाई करना, परन्तु ऊदल कहाँ मानने वाला था । उसकी हठ के आगे देवला की एक न चली, अतः वह ऊदल को लेकर मल्हना के महल में जाती है । मल्हना भी समझाती है । अन्त में जब वह भी विवश हो जाती है तो ऊदल को माड़ौ पर चढ़ाई करने की आज्ञा देती है । इसके बाद ऊदल परमाल से आज्ञा माँगते हैं । वह भी पहले तो मना करते हैं परन्तु जब वह समझ लेते हैं कि ऊदल मानने वाला नहीं है तो युद्धनीति समझाकर आज्ञा प्रदान करते हैं । सभी माताओं व परमाल से आज्ञा लेकर ऊदल आल्हा के पास जाते हैं वहाँ मलखान, देवा व ब्रह्मा से भी बात होती है । आल्हा, ऊदल को समझाने का प्रयास करते हैं परन्तु विफल रहते हैं । अतः आल्हा, ऊदल, मलखान, देवा तथा ब्रह्मा माड़ौ पर चढ़ाई करने की योजना बनाते हैं । देवा भविष्य का ज्ञाता था, अतः वह सलाह देता है कि योगी भेष धारण करके माड़ौ पर विजय प्राप्त की जा सकती है ।

उधर युद्ध की तैयारियाँ चलती हैं इधर देवला ताल्हन सैयद को बुलाकर समझाती है, कि बच्चों के आप पिता के समान हैं । यह हठीले राजकुमार हैं । आप

---

§1§ बड़ा आल्हखंड – पं. सीताराम जी, पृ.48.

भी इनके साथ मारवाड़ जाइए और समय-समय पर इनका मार्ग-निर्देशन कीजिए । माता देवला स्वयं भी ऊदल के साथ माड़ौगढ़ जाने के लिए तैयार होती हैं ।

ढेबा के शकुन के अनुसार सभी राजकुमार, सैयद सहित जोगियों का रूप धारण करते हैं और सबसे पहले मल्हना माता के महल में अलख जगाते हैं तत्पश्चात देवल माता के महलों में भिक्षा मांगते हैं । दोनों माताएँ अपने ही पुत्रों को बदले हुए भेष में पहचानने में असमर्थ रहती हैं तब ऊदल स्वयं रहस्य बताते हैं । वास्तविकता का पता चलने पर, मल्हना, देवल, परमाल आदि सभी वीरों की पीठ थपथपाकर विजय का आशीष देते हैं ।

महोबा की विशाल सेना अपने अपमान का बदला लेने के लिए मारवाड़ पर चढ़ाई करने के लिए तैयार हो जाती है । आल्हा-ऊदल आदि मनिया देवी की अर्चना कर आशीर्वाद ग्रहण करते हैं । अपनी माँ की डोली सजवाते हैं और इस प्रकार विशाल लश्कर, अपनी भव्यता के साथ माड़ौं की ओर प्रस्थान करता है । आल्हा घोड़ा करिलिया पर, ऊदल बेंदुला पर, ढेबा मनोरथा पर, ब्रह्मानंद हरनागर पर, सैयद घोड़ी सिंहिन पर तथा मलखान घोड़ी कबूतरी पर सवार थे । सेना की शक्ति व भव्यता देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था, कि जैसे मानो राजा इन्द्र ने समस्त मृत्युलोक पर विजय प्राप्त करने के लिए अपना सैन्यबल सजा लिया हो ।

सत्रह दिन के लगातार प्रयास के बाद सम्पूर्ण सेना मारवाड़ देश के बबुरी बन में पहुँचती है । समस्त सैनिक वहाँ पड़ाव डाल देते हैं । तम्बू लगा दिए जाते हैं । हाथी, घोड़े, ऊँट आदि यथास्थान बांध दिए जाते हैं । सैनिक व्यायाम करने लगते हैं और तम्बुओं में नाना प्रकार के मनोरंजन शुरू हो जाते हैं । इस प्रकार दस दिन व्यतीत हो जाते हैं । अब ऊदल को अपने उद्देश्य की याद आती है । वह ढेबा से युद्ध व्यूह की सलाह करते हैं । ढेबा सलाह देता है, कि जोगी वेश में ही माड़ौं में प्रवेश किया जाए ।

इस प्रकार आल्हा, ऊदल, मलखान, ढेबा तथा सैयद योगियों का रूप धारण करके, अपनेि आकर्षक साज-सज्जा एवं नाद-यंत्रों के साथ माड़ौं की ओर प्रस्थान करते हैं । ब्रह्मानंद लश्कर की रक्षा तथा देवल माता की देख-रेख के लिए यहीं (लश्कर में) रह जाते हैं । पाँचों वीर गुदड़ी में अपने-अपने हथियार छिपाए हुए थे । बबुरी बन पार करके सबसे पहले वे अनूपी व टोडरमल के दरबार की ओर प्रस्थान करते हैं । मुख्य द्वार

पर द्वारपाल से परिचय के बाद वे अनूपी के दरबार में प्रवेश करते हैं। अनूपी उनके भव्य रूप को देखकर शंकाग्रस्त हो जाता है। वह सोचता है कि यह जोगी नहीं हैं अपितु कोई राजकुमार हैं। मलखान उनकी शंका का निवारण करते हैं। सभी योगी बांये हाथ से राजा अनूपी को अभिवादन करते हैं, जिसे वह अपमान समझता है और क्रोधित हो जाता है। मलखान उनके क्रोध को शांत करने के लिए दांये हाथ से प्रणाम न करने का कारण बतलाते हैं। मलखान ने कहा कि जिस हाथ से हम माला-जाप करते हैं, उस हाथ से ईश्वर के अतिरिक्त किसी को भी प्रणाम नहीं किया जा सकता। मलखान की बात से अनूपी सहमत हो जाता है और योगियों का नाच देखना चाहता है। योगी अपनी कला से उसे मोहित कर लेते हैं। वह जोगियों को बहुमूल्य इनाम देता है तथा महलों में निवास करने का आग्रह करता है, परन्तु योगी तो अपने विशेष उद्देश्य को लेकर आए थे। अतः वे राजा अनूपी से कहते हैं कि—

रमता जोगी, बहता पानी, इनकों कौन सके बिरमाय।

अनेक बहाना बनाकर जोगी अनूपी के महल से माड़ों गढ़ में प्रवेश करते हैं।

मुख्य बाजार में जाकर ऊदल मारवाड़ के वैभव को देखकर दंग रह जाते हैं। जोगी अपने अनोखे कर्तव्य दिखलाकर लोगों को मोहित कर रहे थे। देबा खंजरी, ऊदल बाँसुरी, मलखान एक-तारा, आल्हा डमरू तथा ताल्हन सैयद सारंगी बजाकर व मधुर गीतों को गाकर लोगों का चित्त आकर्षित कर रहे थे।

शहर में आए हुए अलौकिक योगियों की सूचना महलों तक पहुँच जाती हैं और जम्बे-रानी कुसला द्वारा सभी योगियों को परिचारिका द्वारा महलों में बुलाया जाता है। सभी योगी महलों में पहुँचकर अपनी लीला का प्रस्तुतीकरण करते हैं। योगियों के विशाल वक्ष व चौड़े मस्तक को देखकर पहले तो रानी कुसला शंकित होती है लेकिन उचित उत्तर पाकर संतुष्ट हो जाती है। उसी समय आल्हा की नज़र बरगद में लटकी हुई अपने पिता व चाचा की खोपड़ियों की ओर पड़ती है, साथ ही वह उनके कंकालों को भी किले के बुर्ज पर देखते हैं। उन्हें देखकर आल्हा विलाप करने लगते हैं। सैयद आल्हा को इशारे से समझाते हैं। उसी समय हाथी पचशावद भी दिखाई देता है। रानी कुसला देवल का नौलखा हार स्वयं धारण किए हुए थी।

ऊदल यह सब दृश्य देखकर क्षुब्ध हो जाते हैं तथा मूर्छित होकर गिर पड़ते हैं।

कारण पूछने पर मलखान कुसला से कहते हैं कि यहाँ कोई प्रेत है, जिसे देखकर योगी भयभीत होकर मूर्छित हो गया है। रानी की आज्ञा से पांचों योगी अपनी मोहक तान व वाद्यंत्रों की मधुर ध्वनि से रानी सहित संपूर्ण महल के लोगों को मोहित कर लेते हैं। अन्त में रानी उन्हें दक्षिणा देना चाहती है। मोतियों का भरा हुआ थाल लेकर जब सेविका योगियों के पास आती है तो उदल अनजान बन जाते हैं और उन्हें पत्थर कहकर लेने से मना कर देते हैं। वे कहते हैं कि कन्नौज नरेश ने खुश होकर हीरा जड़ित गुदड़ी प्रदान की है। परमाल ने सोने के कड़े प्रदान किए हैं। मैं आपका नौलखा हार चाहता हूँ। यह एक अमिट निशानी होगी। रानी कुसला सोचती है, कि आखिर यह हार भी तो लूट का ही है। यदि मैं इन योगियों को इनाम में दे दूँगी, तो यह हर देश में मेरा यश फैलाएंगे। अतः वह कहती है कि मेरी बेटी को भी अपना नृत्य दिखाओ। मैं यह नौलखा हार तुम्हें प्रदान करूँगी।

ऐसा कहकर रानी सेविका द्वारा अपनी बेटी बिजमा को योगियों का नृत्य देखने के लिए बुलाती है। बिजमा सज-धजकर जब योगियों के समक्ष प्रस्तुत होती है, तो उनके रूप को देखकर मोहित हो जाती है। पान का बीड़ा उदल को देते ही वह मूर्छित होकर गिर पड़ती है, उधर उदल भी मूर्छित हो जाता है। रानी कुसला क्रोधित व शंकित हो जाती है परन्तु मलखान उनकी शंका का निवारण करते हैं। बिजमा अपनी मूर्छा का कारण बताती है कि कम आयु में योगी होने का क्या कारण हो सकता है? इस विचार ने मेरे अन्तःकरण को दुखी कर दिया और मैं मूर्छित हो गई। उसका भी यह बहाना था।

योगियों का नृत्य देखकर रानी कुसला उन्हें अपना नौलखा हार भेंट करती हैं। बिजमा उदल को अपने महल में ले जाती हैं तथा माहिल पुत्र अभयसिंह के विवाह की याद दिलाकर अपनी पहचान बताती है। वह कहती है कि जब मैंने तुम्हें माहिल के बेटे के विवाह में देखा था, तभी से वरण कर चुकी हूँ। उदल कहते हैं, कि बिना माड़ौं विजय के मैं विवाह नहीं करूँगा। उदल की बात सुनकर बिजमा उदल से संकल्प करवाती है, कि वह उससे अवश्य विवाह करेगा। तत्पश्चात वह मारवाड़ की संपूर्ण जानकारी उदल को देती है। वह अपने भाई तथा पिता की वीरता के बारे में भी बतलाती है। सेना व फौज का सारा भेद बता देती है। वह यह भी बतलाती है कि—

कठिन किला है लोहागढ़ को, जहं पर जम्बे बाप हमार ।
बिना सुरंग के जो नहिं टूटन को, चाहे कोटिन करौ उपाय ।
किला दूसरो आसीगढ़ है, जहं पर लघै करिंगा राय ।
बारहदरी कठिन बैठक है, जहं पर सूरज भाई हमार ।
तोप लगाबो तुम बबुरी बन, तुम्हरो काम सिद्ध होई जाय ।§1§

ऊदल बिजमा से विवाह हेतु शपथ ग्रहण करके अपनी योगी-मंडली में आते हैं । ऊदल को न देखकर ताल्हन सैयद आदि व्याकुल हो रहे थे । ऊदल ने सारी जानकारी आल्हा को प्रदान की । उन्होंने यह भी बताया कि मैं राजकुमारी बिजमा से विवाह का संकल्प करके आया हूँ । यह सुनकर आल्हा क्रोधित हो जाते हैं । वे कहते हैं कि दुश्मन की बेटी से विवाह करना तर्कसंगत नहीं है । मलखान, आल्हा की बात का भाव-बोध करके समझाते हैं और भावी कार्यक्रम के बारे में प्रबोधित करते हैं ।

ताल्हन सैयद के परामर्श से सभी योगी-वेषधारी वीर राजा जम्बे के दरबार में जाते हैं । करिंगाराय आदि वीर सभी दरबार में बिराजमान थे । नृत्य आदि मनोरंजन का कार्यक्रम चल रहा था । दरबारी द्वारा अद्भुत जोगियों का समाचार सुनकर राजा जम्बे उन्हें अपने दरबार में बुलाते हैं । जोगियों की विचित्र वेशभूषा और वैभव-पूर्ण स्थिति को देखकर पहले वे शंकित होते हैं, कि यह योगी नहीं, कोई राजकुमार हैं । परन्तु मलखान द्वारा स्पष्टीकरण देने पर वह सन्तुष्ट हो जाते हैं । योगी दरबार में अपना नृत्य-गान प्रस्तुत करते हैं । उनके अनोखे कर्तव्यों को देखकर राजा, दरबारियों सहित मुग्ध हो जाते हैं । उन्हें इनाम आदि प्रदान करते हैं ।

ऊदल माड़ों नरेश से लाखापातुर का नृत्य देखने की इच्छा व्यक्त करते हैं । अस्तु लाखापातुर का नृत्य होता है । यह वही नृतकी थी, जिसे करिया महोबा की लूट में लाया था । नृतकी महोबिया वीरों को पहचान जाती है । ऊदल उसके नृत्य से मुग्ध होकर नौलखाहार भेंट करते हैं । नृत्य समापन के बाद योगी राजा से आज्ञा लेकर प्रस्थान कर देते हैं, उसी समय राजा की नज़र लाखापातुर के गले में पड़े नौलखाहार पर पड़ती है । राजा उससे प्रश्न करते हैं, कि यह हार उसने कहाँ पाया ? पातुर उत्तर देती है, कि ऐसा इनाम आपने कभी नहीं दिया जैसा योगी द्वारा प्रदान किया गया । बात स्पष्ट थी कि नौलखाहार योगियों द्वारा प्रदान किया गया था ।

---

§1§ माड़ों की लड़ाई, पृ. 55.

नौलखाहार के बारे में राजा जम्बे करिया के द्वारा जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं और वे उसे महलों में कुसला के पास भेजते हैं । पहले कुसला नौलखाहार के बारे में अनेक बहाना करती है, अन्त में वह स्पष्ट बतला देती है कि यह नौलखाहार मेरे द्वारा योगियों को भेंट किया गया है । रानी ने यह भी बताया कि जोगियों ने इसे, इनाम के रूप में मांगा था । अब करिंगाराय को समझने में देर नहीं लगती है कि यह योगी नहीं थे, अपितु हमारा भेद जानने के लिए आए हुए योगी वेशभूषा में महोबिया राजकुमार ही थे । यह सारी कहानी अपने पिता जम्बे को सुनाता है । जम्बे क्रोधातुर हो जाते हैं और करिया को योगियों का पीछा करने के लिए कहते हैं । पिता की आज्ञा मानकर करिंगाराय योगियों का पीछा करता है । उनके पास पहुँचकर वह ललकारता है । योगी भी अपनी तलवार खींच लेते हैं । अन्त में करिया भयभीत होकर वापस लौट आता है । अब यह बात स्पष्ट हो जाती है, कि यह निश्चय ही महोबा के वीर हैं ।

आल्हा, ऊदल, मलखान आदि अपने तंबुओं में पहुँचते हैं । माता देवल उनकी आरती उतारती है । सैयद सारा समाचार देवला से बयान करते हैं । ऊदल देबा को साथ ले जाकर नर्मदा नदी में जाकर सेना को पार उतारने का रास्ता खोजते हैं । नर्मदा नदी एक जगह कम गहरी थी, अतः वहाँ से सेना पार करने का रास्ता तय किया जाता है । अब प्रश्न बबूल के बारह कोस के जंगल को काटने का था । यह बड़ा सघन जंगल था और इसी जंगल से होकर माड़ौं जाना था । इस दुर्गम मार्ग में हाथी, घोड़ों तथा ऊँटों का जाना मुश्किल ही नहीं अपितु असंभव था ।

अब बबूल के जंगल को काटने के लिए आल्हा, ऊदल को आदेश देते हैं । ऊदल चन्दन नामक बढ़ई को बुलवाता है, जिसके साथ में नौ सौ बढ़ई थे । चन्दन बढ़ई को बबुरी बन काटने का आदेश दिया जाता है । ऊदल उन्हें यह भी निर्देश देता है कि कहीं-कहीं वृक्ष छोड़ दिए जाएं, जिससे जंगली जानवर तथा गायों इत्यादि को आश्रय मिल सके । जंगल काटने का कार्य प्रारम्भ हो जाता है । तालहन सैयद ने देखा, कि जंगल काटने में काफी समय लग जाएगा । अतः वे सभी राजकुमारों एवं सेना को इस कार्य में मदद करने का आदेश देते हैं । सभी क्षत्री अपने-अपने तेगा लेकर बबूल-बन काटने में लग जाते हैं । कुछ ही दिनों में जंगल काटकर सेना का रास्ता बना लिया जाता है । उधर जम्बे ने अपने पुत्र सूरजसिंह को बुलाकर, सेना तैयार करने का आदेश दे दिया । मारवाड़ की सेना सूरज के निर्देशन में युद्ध के लिए तैयार होने लगी ।

अनूपी, टोंडरमल और ऊदल का संग्राम :-

अनूपी और टोडरमल मारवाड़ नरेश जम्बे के पुत्र थे, जो अलग क्षेत्र में राज करते थे। अनूपी को संदेश-वाहक द्वारा सूचना प्राप्त हुई, कि महोबा-सेना ने बबुरीवन काट डाला है। यह सूचना पाते ही अनूपी और टोडरमल क्रोधित हो जाते हैं। दरबार का मनोरंजन कार्य बन्द कर दिया जाता है तथा तुरन्त सेना की तैयारी का आदेश दे दिया जाता है। तोप दरोगा को बुलाकर संपूर्ण भयंकर तोपें तैयार करने का आदेश दे दिया जाता है। हाथी, घोड़े आदि को तैयार करके एक से एक वीर योद्धा अपनी युद्ध की वेशभूषा धारण करके हथियारों से सुसज्जित हो जाते हैं।

राजा अनूपी एवं टोडरमल भी स्नान-पूजा आदि करके देवी का स्मरण करता है। तत्पश्चात युद्ध की वैभव पूर्ण वेशभूषा धारण करके नाना प्रकार के हथियारों से सुसज्जित होकर रण क्षेत्र की ओर प्रस्थान करता है। संपूर्ण तोपखाना, हाथी, घोड़ा एवं पैदल सेना के प्रस्थान से आसमान धूल से आच्छादित हो जाता है। उधर ऊदल की संपूर्ण सेना यथोचित स्थान से नर्मदा नदी पार करके बबूल के वन में डेरा डाल देती है तथा ऊदल एवं देवा अपनी कटीली सेना के साथ युद्ध के मैदान में आ जाते हैं।

ऊदल और अनूपी की बातचीत होती है। अनूपीकहता है, कि तुम कहां के रहने वाले हो और क्यों बबूल का जंगल काटा है ? . ऊदल, अनूपी को अपना परिचय देते हुए माड़ौं पर चढ़ाई करने का कारण बताता है। जब अनूपी, ऊदल को महोबा वापस जाने के लिए कहता है, तो वह जवाब देता है—

ऊदल बोले तब अनुपी से, ठाकुर सुनौ हमारी बात।
बदलौ लैहौं हम माड़ौं में, तब हम पैहैं कूच कराय।
जो, जो चीजें हमको चहिये, सो सब तुरत देउ मंगवाय।
घोड़ा पपीहा महुबे वालो, लाखा पातुर देव मंगाय।
और नौलखा गजपचखावद, सो तुम तुरत देउ मंगवाय।
रानी बिजमा को डोला सजि, लावो शीश करिंगाराय।
मुश्क बाँधिके तुम जम्बे की, हमरी नजर गुजारो आय।{1}

इस प्रकार ऊदल की बानी को सुनकर अनूपसिंह अग्नि-ज्वाल हो जाता है। वह अपनी

{1} बड़ा आल्हखण्ड : पं.महावीर प्रसाद जी, पृ. 86.

सेना के तोप दरोगा को तोपों में पलीता लगाने का आदेश देता है, उधर ऊदल भी तोपों का प्रहार जारी करने का संकेत देते हैं। तोपों की भीषण गर्जना व मार से आसमान धूम्र से आच्छादित हो जाता है। क्षत्री बहुतायत में मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। इसके उपरान्त भाला, बरछी का युद्ध होता है। अनूपी की बहुत-सी सेना क्षति-ग्रस्त हो जाती है तथा आधे से अधिक सभी सैनिक कालकवलित हो जाते हैं। अब आमने-सामने का युद्ध प्रारम्भ हो रहा था। तीरों की सनसनाहट तथा तलवारों की खटखटाहट से रणचण्डी की चेतना जागृत हो रही थी।

अनूपी-टोडरमल की सेना में त्राहि-त्राहि मच गई। उनकी सेना भागने लगी। बघेला-कुमार ने जब अपनी सेना का यह हाल देखा, तो वह चिन्ताग्रस्त हो गया। ऊदल के सम्मुख आकर युद्ध के लिए [द्वन्द्व युद्ध] ललकारने लगा। अनूपी कहता है, कि सैनिक दो पैसो के नौकर हैं। इनके संहार से कोई लाभ नहीं है। मैं तुम्हारी समकक्षता का हूँ। मुझसे युद्ध करो। ऊदल चुनौती स्वीकार करता हुआ, अनूपी से प्रहार करने के लिए कहता है। परन्तु अनूपी ऊदल से प्रथम प्रहार करने के लिए कहता है, तो ऊदल राजा परमाल द्वारा प्रदान की गई युद्ध-नीति की शिक्षा का उल्लेख करते हैं—

> चोट पहिली हम ना मारैं, ना आगे के परैं पिछार।
> बालक बूढ़े को ना मारे, ना तिरियन पर डारैं हाथ।
> ना हम मारे गौ ब्राह्मन को, तासे करौ चोट तुम आय।[1]

ऊदल की बात सुनकर बघेला कुमार ऊदल के ऊपर क्रमशः तीन प्रहार करता है। उसके तीनों प्रहार खाली जाते हैं। अब ऊदल का नम्बर आता है। ऊदल अपनी सिरोही के एक ही प्रहार में अनूपी का खेल तमाम कर देते हैं। अपने भाई की हत्या देखकर टोडरमल सामने आता है। ऊदल का उसके साथ भी संग्राम होता है। कुछ ही समय में ऊदल ढाल की चपेट से उसे भी रणभूमि गिरा देते हैं। ढेबा तुरंत ही उसे बन्दी बना लेता है। ऊदलसिंह के इशारे से वह बन्दी बनाकर लश्कर की ओर प्रस्थान कर देता है। इस प्रकार मारवाड़ के प्रथम संग्राम में ऊदल राजा जम्बे के प्रथम दोनों पुत्रों को परास्त कर, विजय का श्रेय प्राप्त करते हैं।

सूरजमल की लड़ाई :-

सूरजमल माड़ौं-नरेश का तृतीय पुत्र था, जो बारहदरी में राज करता था।

---

[1] माड़ौं की लड़ाई - अमोलसिंह, पृ. 69.

माड़ोगढ़ के संग्राम की श्रृंखला में यह द्वितीय लड़ाई को प्रस्तुत करती हैं । जब धावन द्वारा सूरजमल को यह ज्ञात हुआ, कि महोबा की सेना ने मारवाड़ देश पर आक्रमण कर दिया है तथा उसके भाई अनुपी की हत्या एवं टोडरमल को बन्दी बना लिया है, तो उसे बड़ी चिन्ता हुई । उसे यह भी समाचार मिला कि बबुरी बन भी महोबा-सेना ने काट डाला है । अभी अनुपी का शव रण क्षेत्र में ही पड़ा हुआ था ।

अपने भाई की मृत्यु व बन्दी बनाए जाने के समाचार ने सूरजमल को न केवल चिंतित कर दिया अपितु क्रोधित भी कर दिया । वह तुरन्त सेना को तैयार होने का आदेश देता है । कुछ ही समय में सूरजमल की सेनाएँ रणक्षेत्र के लिए प्रस्थान कर देती हैं । सर्वप्रथम मारवाड़-कुमार अपने भाई के शव को रणभूमि से उठाकर माड़ों भिजवा देता है, तत्पश्चात उदल को युद्ध के लिए ललकारता है । उदल बाँकुरे ने तो अपने पिता का बदला लेने की ठान ली थी । प्रतिहिंसा की आग उसके सीने में धधक रही थी, अतः वह सूरजमल के आक्रोशपूर्ण प्रश्नों का उत्तर आक्रोशपूर्ण भाषा में देता है । वह अपना परिचय इस प्रकार देता है :-

> बोले उदल सूरजमल से, तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
> हम यदि आए हैं महुबे से, हम बबुरीबन दियो कटाय ।
> हमने मारो है अनुपी कों, औ टोडर को लियो बंधाय ।
> हम हीं सूरमा हैं महुबे के, हमरोइ नाम उदयसिंह राय ।[1]

उदल द्वारा परिचय सुनकर सूरज आग-बबूला हो जाता है । वह अपनी सेना के तोपची को तोपें दागने का आदेश देता है, उधर महोबा की तोपें भी आग उगलने लगती हैं । तोपों की लड़ाई के उपरान्त फेंक कर वार करने वाले हथियारों का युद्ध होता है । अन्त में दोनों सेनाएँ मिल जाती हैं और तलवारों और तेगों की मार आरम्भ हो जाती है । दोनों वीर अपने-अपने अनोखे रण-कौशल का परिचय दे रहे थे । उदल की युद्ध कला की तुलना में मारवाड़ सेना व नायक की कला मद्धिम पड़ रही थी । अन्त में उदल और सूरजसिंह का आमना-सामना होता है । परमर्दिदेव द्वारा प्रदान की गई युद्ध-नीति के अनुसार उदल पहले प्रहार नहीं करना चाहते थे । अतः सूरजमल, उदल पर प्रहार करता है । सूरजमल के सभी भीषण प्रहारों को उदल नाकाम कर देता है । कुछ रण-कौशल का प्रभाव तथा कुछ कुल-देवी कृपा ।

---

[1] माड़ों की लड़ाई - पृ. 94.

इसके बाद ऊदल का नम्बर आता है । वह एक ही प्रहार में सूरजमल की ढाल काट देता है और दूसरे प्रहार में सूरज धराशायी हो जाता है । राजा की वीरगति के बाद मारवाड़ सेना में भगदड़ मच जाती है । इस प्रकार ऊदल माड़ों की दूसरी लड़ाई में भी विजयी होते हैं । माड़ौंगढ़ की तीसरी लड़ाई करिया की लड़ाई है ।

करिंगाराय ﴾करिया﴿ की लड़ाई :-

करिया या करिंगाराय राजा जम्बे का चौथा पुत्र था, जो अत्यधिक वीर योद्धा एवं वरदानी था । माड़ौंगढ़ के विनाश का कारण भी करिया ही था, क्योंकि इसने ही अर्धरात्रि में अपने संपूर्ण सैन्य-बल के साथ महोबा की लूट की थी तथा दस्सराज और बच्छराज को बन्दी बनकर लाया था एवं माड़ों में उनकी हत्या कर दी थी । यह बड़ा ही दुष्ट प्रवृत्ति का राजकुमार था । इस संग्राम में करिया की वीरता एवं वीरगति का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है ।

संदेशवाहक ने जब करिया को युद्ध का समाचार बताया, तो वह भयभीत हो गया । सूरजमल की मृत्यु के समाचार ने उसके हृदय को फाड़ दिया । परन्तु अब युद्ध के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग ही नहीं था । अतः वह अपनी विशाल सेना लेकर युद्ध की तैयारी करता है । तोपें, हाथी, घोड़े और ऊँट अपने-अपने सवार योद्धाओं को धारण करके तैयार हो जाते हैं । करिया इष्टदेव की पूजा करता है तथा हाथी पचशावद और घोड़ा पपीहा को भी तैयार करवा लेता है । जब वह युद्ध वेशभूषा से सुसज्जित होकर पचशावद पर सवार होने लगता है, तो अपशकुन होता है । पंडित द्वारा मना करने के उपरान्त भी वह युद्ध-स्थल की ओर प्रयाण कर देता है । सर्वप्रथम वह सूरजमल के शव को रणभूमि से उठाकर पालकी में रखकर माड़ों भेज देता है, तत्पश्चात महोबिया वीरों को युद्ध के लिए ललकारता है । ऊदल उसकी ललकार का जवाब देते हैं । उसकी दुष्प्रवृत्ति से अवगत कराते हैं तथा लूट-प्रवृत्ति की कायरता पूर्ण नीति की भर्त्सना करते हैं । करिया लज्जित हो जाता है और तोपों के गोलों की वर्षा शुरू कर देता है ।

तोपों, भाला-बरछी तथा तेगा-तलवारों का भीषण संग्राम होता है । अनेक योद्धा रणचण्डी का आहार बन जाते हैं । ऊदल तथा करिया के द्वन्द्व-युद्ध में ऊदल उसे घायल व मूर्छित कर देते हैं । तब वह हाथी पचशावत को सांकल फेंकने का आदेश देता है ।

हाथी द्वारा सांकल के प्रहार से सेना में {महोबा सेना} भगदड़ मच जाती है। ऊदल मूर्छित हो जाते हैं। इस प्रकार हाथी का जौहर महोबा-सेना की हानि कर रहा था। वह ऊदल को बंदी बना लेता है। घोड़ा बेंदुला भागकर लश्कर में आ जाता है। उधर पठान-पुत्र रंगा और बंगा भी कठिन मारों से ऊदल की सेना जान बचाकर भाग रही थी।

रूपनबारी ने जब ऊदल को युद्धभूमि में बन्दी देखा, तो वह तुरन्त लश्कर में पहुँचा तथा युद्ध की सभी गतिविधियों से आल्हा आदि को अवगत कराया। उसने माता देवल को भी हाथी पचशावत की युद्ध-कला व जौहर के बारे में बताया। सभी बहुत चिंतित हुए। देवल ने सभी को समझाया और कहा, कि तुम सब तुरन्त युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी। वह महोबे का हाथी है, मैंने उसकी सेवा की है और भोजन खिलाया है। वह मुझे अवश्य ही पहचान जाएगा। ऊदल, आल्हा, मलखान, देवा सैयद और ब्रह्मानंद क्रमशः घोड़ा [illegible] करिलिया, घोड़ी कबूतरी, घोड़ा मनोरथा, घोड़ी सिंहिन तथा घोड़ा हरनागर पर सवार होकर, विशाल सेना सहित रणभूमि के लिए रवाना हो जाते हैं। माता देवल पालकी में सेना के आगे चल रही थी। कुछ समय के अन्तराल में मलखान तथा माता देवल रणक्षेत्र में पहुँचते हैं। हाथी अपना कर्तव्य दिखा रहा था तथा ऊदल बंधे पड़े हुए थे। देवल हाथी के सामने प्रस्तुत होती हैं तथा उसे अतीत बोध कराती है। वह करिया के पाप कर्मों से भी हाथी को अवगत कराती हैं। देवल की बातें सुनकर हाथी की संवेदना जागृत हो जाती है। वह भावावेश में आ जाता है और सांकल घुमाना बन्द कर देता है। वह देवला को पहचान भी जाता है।

हाथी पचशावद रणभूमि में बैठ जाता है। करिंगा राय हाथी की यह दशा देखकर क्षुब्ध हो जाता है और तुरन्त घोड़ा पपीहा पर सवार होकर युद्ध करने लगता है। उसी समय आल्हा, मलखान, देवा, ब्रह्मा और सैयद रणक्षेत्र में सेना लेकर पहुँच जाते हैं। ऊदल बन्धन-मुक्त हो जाते हैं। स्वयं को बन्दी बनाए जाने पर वह लज्जित हो जाते हैं। रानी देवल आल्हा से पचशावद पर सवारी करने को कहती है। वह यह भी बताती है कि यह तुम्हारे दादा का प्रिय हाथी है। अस्तु,आल्हा नारायण का स्मरण करके हाथी पर सवार हो जाते हैं। अब करिया की सेना और महोबा की सेना में भयंकर युद्ध छिड़ जाता है।

- -

{1} संदर्भ : माड़ौगढ़ का संग्राम.

मलखान चूंकि ऊदल के बड़े भाई थे, अतः ऊदल उनसे करिया का सामना करने के लिए निवेदन करते हैं। अब मलखान और फारिंगाराय का द्वन्द्व-युद्ध होता है। उधर पठान वीर रंगा की ऊदल तथा बंगा की देवा हत्या कर देते हैं। उधर मलखान और करिया अपनी-अपनी आन पर डटे हुए। करिया के सभी प्रहारों को मलखान जैसा वीर नाकाम करता जा रहा था। वह अत्यधिक चिंता-ग्रस्त होता जा रहा था। अन्त में मलखान अपनी खड्ग से करिया का सिर धड़ से अलग कर देते हैं। ऊदल उसका सिर उठाकर आल्हा के पास ले जाते हैं। आल्हा तुरन्त रूपन के द्वारा करिया का सिर महोबा भेजते हैं, क्योंकि जिस अवधि में आल्हा-ऊदल को महोबा वापस पहुँच जाना चाहिए, वह अवधि समाप्त हो रही थी। ऊदल सोच रहे थे, कि महोबा में चन्देले व रानी मल्हना अत्यन्त चिंतित होंगे, क्योंकि उन्हें मारवाड़ युद्ध का कोई समाचार नहीं मिला। महोबा में राजा परमाल और रानी मल्हना वास्तव में चिंता युक्त थे, कि ऊदल द्वारा वापस लौटने की अवधि समाप्त हो गई थी। उनके मन में नाना-प्रकार के विचार आ रहे थे। उसी समय माहिल ने उन्हें मिथ्या सूचना दी, कि महोबा के सभी राजकुमार अपनी सेना सहित मारवाड़ के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गए हैं। अब तो रानी मल्हना का धैर्य टूटने लगा। वह अत्यधिक विलाप करके, ऊदल की वीरता का बखान करके आर्तनाद करने लगी। परमाल भी विलाप करने लगे। उसी समय रूपनवारी पालकी में करिया का सिर रखकर दरबार में हाज़िर होते हैं। सारा समाचार पाकर राजा चन्देल प्रसन्न हो जाते हैं तथा मल्हना की खुशी का ठिकाना नहीं रहता है। कारण स्पष्ट था, कि महोबा-कुमारों ने अपने दादा की मौत का बदला ले लिया था।

सूचना देकर रूपन तुरन्त भाई के लिए वापस प्रस्थान कर देते हैं, क्योंकि उन्हें आल्हा के आदेशानुसार शीघ्र ही मारवाड़ पहुँचना था। आल्हा-ऊदल, मलखान के प्रहारों से मारवाड़ सेना के पैर उखड़ चुके थे और उनकी विजय हो चुकी थी। परन्तु जब राजा जम्बे को युद्ध का समाचार मिलता है, तो वे मूर्छित हो जाते हैं, क्योंकि उनके चारों पुत्र शहीद हो चुके थे। वह महलों में जाकर कुशला को सारा हाल सुनाते हैं। वह भी निराश हो जाती है। उसे बारम्बार अपने पुत्र करिया के कुकर्मों की याद आती है। जो दूसरों के साथ अन्याय करता है, भगवान उसका कभी भला नहीं करता। करिया ने निर्दोष दस्सराज-बच्छराज की हत्या करदी थी, उसी का परिणाम राजा जम्बे को भोगना पड़ रहा था।

अपने पिता की चिन्तातुर अवस्था को देखकर राजकुमारी बिजमा उन्हें धीरज बंधाती है। वह ऊदल को बन्दी बनाए जाने का आश्वासन भी देती है, क्योंकि उसके पिता के अनुसार ऊदल ही भाइयों के विनाश का मूल था। अब बिजमा युद्ध क्षेत्र में जाकर जादू की लड़ाई करती है। वह आल्हा, मलखान, ताल्हन सैयद, देबा व ब्रह्मा आदि को जादू से भौचक्का कर देती है तथा ऊदल को भेड़ा बनाकर अपने साथ ले जाती है, और झारखंड में बाबा झिलमिला के मन्दिर में कैद कर देती है। इधर जब महोबा वीरों के ऊपर जादू का असर समाप्त होता है, तो वे युद्धभूमि में ऊदल को न पाकर, व्याकुल हो जाते हैं। आल्हा आदि विलाप करने लगते हैं। अन्त में मलखान देबा से ऊदल के बारे में पूछते हैं। देबा ब्राह्मण पुत्र था तथा ज्योतिष का पंडित भी। अतः वह सब कुछ बता देता है। वह यह भी बताता है कि हमें पुनः योगी वेश धारण करना पड़ेगा तभी ऊदल को पाया जा सकता है।

अस्तु, मलखान और देबा योगी वेशभूषा धारण करके झारखंड में बाबा झिलमिला के मंदिर में जा पहुँचते हैं। आकर्षक योगी-वेश, उस पर मधुर स्वर लहरी एवं साज-बाज, बाबा को आकर्षित कर लेता है। वह मुग्ध हो जाते हैं और जोगियों को उनकी इच्छानुसार इनाम देना चाहते हैं। मलखान भेड़ा वेषधारी ऊदल को ही प्राप्त कर लेते हैं। बाबा दिए गए वचनों के अनुसार भेड़ा देने के लिए विवश हो जाते हैं। योगियों की इच्छा के अनुरूप वह उसे भेड़ा के स्थान पर मानुष बना देते हैं। मलखान भाई से मिलकर प्रसन्न हो जाते हैं। ऊदल मलखान को प्रणाम करके कहने लगे, कि– जब बिजमा को पता चलेगा, तो वह फिर जादू का प्रयोग करेगी। अतः इस बाबा को ही स्वर्ग पहुँचा दिया जाए। ऊदल के इशारे से मलखान बाबा झिलमिला का काम तमाम कर देते हैं। मलखानसिंह जब ऊदल को लेकर लश्कर में वापस आते हैं, तो देवल सहित सभी प्रसन्न हो जाते हैं।

अब ऊदल आल्हा से निवेदन करते हैं, कि लोहागढ़ के किले को तोपें लगाकर ध्वस्त कर दिया जाए। आल्हा उनकी बात का प्रतिवाद करते हैं। वे कहते हैं, कि युद्ध नीति के अनुसार पहले राजा जम्बे के पास शान्ति प्रस्ताव भेजा जाए। यदि वे हमारी शर्तें स्वीकार कर लेते हैं, तो व्यर्थ का खून-खराबा रोका जा सकता है। अस्तु वे संदेश-वाहक द्वारा राजा बघेला [जम्बे] के दरबार में शान्ति प्रस्ताव भेजते हैं।

जम्बे की लड़ाई :-

मारवाड़ की अन्तिम लड़ाई बघेला राजा जम्बे का संग्राम है, जिसमें उसे अपने पुत्र करिंगाराय के दुष्कर्मों की भारी कीमत चुकानी पड़ती है । इससे यह प्रतीत होता है, कि हर प्राणी को अपने कर्तव्य का प्रतिफल अवश्य प्राप्त होता है ।

आल्हा द्वारा भेजे गए पत्र को पढ़कर राजा जम्बे युद्ध के लिए तैयार हो जाता है । मंत्री द्वारा सलाह देने के उपरान्त भी वह आल्हा द्वारा रखी गई शर्तों को मानने के लिए तैयार नहीं होता है । इसमें वह अपना अपमान समझ रहा था, क्योंकि आल्हा ने उसकी पुत्री की डोली देने की शर्त भी रखी थी । वस्तुतः कोई भी पिता, अपनी पुत्री का विवाह शक्ति के समक्ष नत-मस्तक होकर नहीं करना चाहेगा ।

अतः वह अपने सेनापति को महोबा-सेना के साथ युद्ध करने का आदेश दे देता है । उधर आल्हा-ऊदल आदि ने लोहागढ़ पर आक्रमण कर दिया । तोपों के अंधाधुंध प्रहार के बाद भी लोहागढ़ का किला और मुख्य द्वार ध्वस्त नहीं हो रहा था । अतएव ढेबा और मलखान के परामर्श से सुरंग का निर्माण किया जाता है । किले के चारों ओर जो गहरी खाई थी, उसे बबुरी बन की लकड़ी से समतल कर दिया जाता है तथा सुरंग में बारूद भर दी जाती है । विस्फोट के साथ किला की दीवारें ध्वस्त हो जाती हैं और फाटक [मुख्य द्वार] टूट जाता है ।

इस प्रकार महोबा की सेनाएँ फाटक के अन्दर प्रवेश कर जाती है । सूचना पाते ही मारवाड़-नरेश स्वयं हाथी पर सवार होकर युद्ध करने के लिए विवश हो जाता है । उसकी भीषण युद्ध-कला व वीरता से आल्हा की सेना में खलबली मच जाती है । ऊदल व ढेबा का घोड़ा जख्मी हो जाता है । युद्ध की बदली हुई परिस्थितियों को देखकर मलखान, आल्हा से युद्ध करने का आग्रह करते हैं । उन्होंने कहा, कि- दादा मारवाड़-नरेश आपका समकक्षी है, अतः आप ही इससे द्वन्द युद्ध करें ।

भौंरानंद हाथी पर आसीन जम्बे तथा पचशावद पर सवार आल्हा युद्ध में एक-दूसरे पर भूखे सिंहों की तरह टूट रहे थे । पचशावद सांकल घुमाता है, जिससे जम्बे की सेना में भगदड़ मच जाती है । उसी समय आल्हा का हाथी मारवाड़-नरेश को युद्ध-भूमि में गिरा देता है । आल्हा तुरन्त उसे बन्दी बना लेते हैं । जम्बे के बन्दी बनाए जाने पर माड़ों की सेनाएँ हथियार डाल देती हैं और आल्हा की विजय का घोष होने

लगता है। महोबा-सेनाएँ माड़ौं के शाही खजाने पर अधिकार कर लेती हैं। अस्त्रागार लूट लिया जाता है तथा नगर की लूटमार कर ली जाती है। आल्हा, बबुरीबन से अपनी माता देवल को तथा माड़ौं के महल से रानी कुशला को बुलाते हैं। देवल पालकी में सवार होकर माड़ौं के मुख्य द्वार पर उपस्थित होती है तथा कुशला भी अपनी बाँदियों के साथ आती है और आल्हा की अधीनता स्वीकार करती हैं। करिया द्वारा लूटी हुई लाखापातुर, हार नौलखा तथा चीरा कलगी आदि ऊदल के हवाले कर देती है। इतना ही नहीं वह ऊदल से नारियों पर हाथ न डारने का भी निवेदन करती है। ऊदल स्वयं चरित्रवान क्षत्री था, फिर राजा परमाल ने उन्हें पहले ही युद्ध नीति की शिक्षा देकर एक सच्चरित्र योद्धा बना दिया था। परमाल ने माड़ौं पर आक्रमण से पूर्व उन्हें शिक्षा दी थी, कि कभी स्त्रियों पर प्रहार नहीं करना चाहिए। यह व्यवहार युद्धनीति के विपरीत है। अस्तु,ऊदल रानी कुशला का यथोचित सम्मान ही करते हैं।

अब आल्हा, ऊदल, मलखान आदि वीर अपनी माता देवल की पालकी व कुशला के साथ उस बरगद के पेड़ के पास जाते हैं, जहाँ दस्सराज व बच्छराज के सिर लटक रहे थे। वहाँ ऊदल सोने के थाल में शीशों को रखकर उनकी आरती करते हैं। उनके पितरों की आभा उन्हें आशीर्वाद और वरदान देती है। राजा जम्बै का सिर भी काटकर थाल में रखा जाता है और जिन्दा ही उसी कोल्हू में पीस दिया जाता है, जिसमें करिंगाराय ने दस्सराज और बच्छराज को पीस दिया था। माड़ौं-नरेश की यह दशा देखकर रानी कुशला विलाप करने लगती है, तो ऊदल अतीत का स्मरण दिलाकर उसे सांत्वना प्रदान करते है। जम्बै की आभा भी ऊदल से अपने सिर को गंगा में विसर्जित करने की गुहार करती है।

इसके उपरान्त ऊदल को अपने उस आश्वासन की याद आती है, जो उन्होंने जम्बै-पुत्री बिजमा को दिया था। अतः वह अपने भाई आल्हा से, बिजमा के साथ विवाह-संकल्प पूरा करने हेतु निवेदन करते हैं। परन्तु आल्हा यह कहकर प्रस्ताव अस्वीकार कर देते हैं, कि दुश्मन की पुत्री के साथ विवाह नहीं करना चाहिए। वह कभी भी प्राणघाती सिद्ध हो सकती है। आल्हा के इशारे से मलखान बिजमा की हत्या कर देते हैं। अपने साथ किए विश्वासघाती हमले से क्षुब्ध होकर वह मलखान को शाप दे देती है, कि दादा, तुम्हारी हत्या भी धोखे से की जाएगी। उस समय तुम्हारे भाई-बान्धव तुम्हारी सहायता करने में असमर्थ हो जाएँगे।

उदल अपने संकल्प पर लज्जित हो जाते हैं और वह बिजमा से कहते हैं, कि अब हमारा मिलन कब होगा । बिजमा कहती है, कि- अगले जन्म में मैं नरवरगढ़ में जन्म लूँगी । फुलवा मेरा नाम होगा और जब आप घोड़ा खरीदने के लिए काबुल जाओगे, उसी समय हमारा मिलन होगा । यह कहते-कहते बिजमा अपने प्राण छोड़ देती है ।

महोबा की सभी सेनाएँ विजयश्री प्राप्त करके वापिसी की तैयारी करती हैं । मलखान और उदल अपनी देवल को साथ लेकर गया करने के लिए रवाना होते है तथा आल्हा, ब्रह्मा एवं ताल्हन सैयद आदि महोबा के लिए प्रस्थान करते हैं । आल्हा, रूपनवारी के द्वारा परमर्दिदेव को अपनी वापसी की अग्रिम सूचना प्रेषित कर देते हैं । सूचना पाकर रानी मल्हना आदि रानियाँ तथा राजा परमाल अत्यधिक प्रसन्न होते हैं।

जब सेनाएँ विजय-ध्वज फहराती हुई महोबा पहुँचती है, तो वे सागर पर डेरा डाल देती हैं । तोपों की सलामी दागी जाती है । रानी मल्हना अन्य रानियों के साथ आकर अपने पुत्रों की आरती उतारती है तथा मस्तक का चुम्बन करती है । राजदरबार में जाकर ताल्हन सैयद परमालिक को युद्ध की सारी मुख्य-मुख्य घटनाओं की जानकारी देते हैं । आल्हा, ब्रह्मा तथा देबा आदि उन्हें प्रणाम कर आशीष ग्रहण करते हैं । इधर मलखान सहित उदल गया करके आ जाते हैं । माता देवल कीरत सागर पर वैधव्य की लोकरीति का निर्वाह करती है यानी चूड़ियाँ इत्यादि तोड़ती है ।

परमाल रासो [आल्हखंड] में आल्हा-उदल की विजयश्री का यह प्रथम संग्राम है । बारह वर्ष की अल्पायु में इन वीरों ने जिस साहस और वीरता का परिचय दिया, वह वास्तव में अद्भुत था । भारतवर्ष को ऐसे वीरों पर गर्व हैं । यह भारतभूमि धन्य है, जहाँ ऐसे रणबाँकुरों ने जन्म धारण किया । अगर हम इसे मात्र काल्पनिक मानें, तो युक्तिसंगत न होगा, क्योंकि 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में 23 वर्षीया रानी लक्ष्मीबाई ने जिस अद्भुत जौहर का परिचय दिया, वह किसी से छिपा नहीं है । भारत की मिट्टी कुछ है ही ऐसी भाग्यशाली ।

नैनागढ़ का संग्राम [आल्हा का ब्याह] :-

नैनागढ़ का संग्राम आल्हा-विवाह का संग्राम है । यह परमाल रासो में नवम् संग्राम माना जाता है । इसमें नैनागढ़-नरेश नैपाली, उसके पुत्र जोगा-भोगा तथा

विजया के रण-कौशल तथा महोबा विजय का चित्रण है ।

राजा नैपाली नैनागढ़ में राज्य करता था, जिसकी एक पुत्री थी । उसका नाम सोनवां था । जब सोनवां बारह वर्ष की हो गई, तो अपनी सहेलियों के साथ बाल-क्रीडाएँ करने लगी । एक दिन उसकी सहेलियों ने सोनवां के विवाह न होने पर व्यंग किया । परिणाम स्वरूप वह उदास हो गई । रानी ने समाचार जाना, तो उसने राजा से उसके विवाह का प्रस्ताव किया ।

राजा ने तुरन्त नेगियों को बुलाकर इसके टीका की तैयारी की । नाई, बारी, भाट पुरोहित आदि को टीका का सामान देकर राजा ने वर की तलाश में उन्हें अन्य राजाओं के पास भेजा । उन्हें महोबा में टीका न चढ़ाने का निर्देश दिया । नेगी दिल्ली, कन्नौज आदि जगह घूम आए, परंतु किसी ने टीका स्वीकार नहीं किया क्योंकि नैनागढ़ में विजय प्राप्त करना, लोहे के चने चबाना था । अतः नेगी वापस आ गए । तब राजा ने सोनवां का स्वयंवर रचाया । उसने रणक्षेत्र में डंका रखवा दिया और यह घोषणा की, कि जो राजा इस डंके को बजा देगा, उसी के साथ मैं अपनी पुत्री का विवाह कर दूँगा ।

देश-देश के राजा आए, परन्तु उनमें राजा नैपाली से युद्ध करने का साहस नहीं हुआ । उन्होंने नैनागढ़-नरेश की अधीनता स्वीकार करली । अन्त में सोनवां अत्यधिक चिंतित हुई । उसने महोबा के लिए ऊदल को पत्र लिखकर सूचित किया, कि मैं आल्हा को वरण कर चुकी हूँ । मैं किसी अन्य राजा के साथ ब्याह नहीं करूँगी, चाहे जीवन पर्यन्त अविवाहित रहना पड़े । यह पत्र उसने अपने पालतू तोता के द्वारा प्रेषित किया । शिकार खेलते हुए, ऊदल को यह पत्र मिलता है । समाचार जानकर वह प्रसन्न हो जाते हैं । वह राजा परमाल को पत्रलिखित बातों से अवगत कराते हैं । राजा परमाल सोनवां के विवाह प्रस्ताव से किसी को अवगत नहीं कराना चाहते थे, परन्तु मलखान के आग्रह करने पर वह सारी बातें बता देते हैं ।

मलखान आल्हा के विवाह हेतु लश्कर तैयार करने की आज्ञा मांगते है, परन्तु परमालिक उन्हें मना करते हैं । उनका कहना था, कि नैपाली को जीतना संभव नहीं है । उसकी कटीली सेना के साथ एक अमरढोल भी है, जिसकी आवाज सुनते ही मृत सैनिक पुनः जीवित हो जाते हैं । चूंकि भाई के ब्याह हेतु ऊदल को सोनवां द्वारा

आमंत्रित किया गया था, अतः मलखान उदल आदि ने इसे एक चुनौती समझकर स्वीकार किया तथा परमाल की बात न मानी । रानी मल्हना तथा देवल आदि ने भी उन्हें समझाया परन्तु उनकी एक न चली । इसलिए विवश होकर उन्हें आज्ञा देनी पड़ी ।

मलखान, उदल, ढेबा, सैयद, जगनिक, मुन्नागुजर आदि महोबिया वीर सेना की तैयारी में लग जाते हैं । शुभ मुहूर्त देखकर आल्हा को दूल्हा बनाकर लोकरीति का निर्वाह किया जाता है । उधर उदल उसी तोते के माध्यम से सोनवां को पत्र का उत्तर लिखकर भेज देते हैं । वह पत्र में आश्वासन देते हैं, कि-"तुम्हारा अवश्य ही आल्हा के साथ विवाह होगा । मैं अपना लश्कर लेकर नैनागढ़ की ओर प्रस्थान कर रहा हूँ ।"

महोबा की विशाल सेना अपने अनोखे हाथी और घोड़ों के साथ नैनागढ़ के लिए प्रस्थान करती है । अनेक सम्बन्धी राजा भी अपने सैन्य-बल के साथ बारात में समाहित थे । नैनागढ़ पहुँचकर सेना पड़ाव डाल देती है । उदल ढेबा से शुभ मुहूर्त पूछकर रूपनवारी को नेपाली के दरबार में भेजते हैं । रूपनवारी घोड़ा करेलिया पर सवार होकर एवं अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर रूपनवारी लेकर नैनागढ़ जाता है । इधर उदल राजा द्वारा रखे हुए डंके को बजाकर उसे युद्ध की चेतावनी देते हैं । रूपन-बारी दरबार में पहुँचकर सारा समाचार सुनाता है । वहाँ उसका भयंकर युद्ध होता है । अपनी वीरता का परिचय देकर रूपनबारी वापस लश्कर में आता है ।

नैनागढ़-नरेश अपने बेटों को बुलाकर युद्ध की तैयारी का आदेश देते हैं । कुछ ही समय में नैनागढ़ की सेनाएँ युद्ध के लिए तैयार हो जाती हैं । इधर रूपन का समाचार पाकर मलखान-उदल भी तुरन्त अपने लश्कर को तैयार करके रणखेत में आ डटते हैं । नैनागढ़ से जोगा-भोगा (नेपाला-नरेश के पुत्र) अपनी सेना का नेतृत्व कर रहे थे । दोनों सेनाओं में भीषण युद्ध होता है । नैनागढ़ की सेना जब आधी रह गई, तो जोगा-भोगा बहुत व्याकुल हो गए । उनकी सेना महोबा की सेना के सामने पैर उखाड़ने लगी । युद्ध की ऐसी दशा देखकर, भोगा वापस नैनागढ़ जाकर अपने पिता को युद्ध का सारा हाल कह सुनाता है । राजा अपने पुत्र की चिन्ता का निवारण करते हैं और धैर्य बंधाते हैं । वह महलों में जाकर इन्द्रदेवता द्वारा प्रदान किया गया अमरढोल लाकर

- -

संदर्भ : नैनागढ़ की लड़ाई – कुवंर अमोलसिंह, सातवाँ संस्करण – 1972.

भोगा को देते हैं । उसकी महिमा बताते हैं । ढोल लेकर भोगा पुनः रणखेत में जाता है । ढोल के बजाते ही सभी मृत सैनिक जीवित हो जाते हैं । दोनों सेनाओं में पुनः भीषण युद्ध होता है ।

अमरढोल की महिमा और जोगा-भोगा द्वारा अपनी सेना का मनोबल बढ़ाने से नैनागढ़ सेना ने भीषण मारकाट शुरू करदी । ढोल की ध्वनि सुनकर नैनागढ़ की सेना के मृत सैनिक पुनः जीवित हो जाते थे । अब महोबा की सेना के पैर उखड़ने लगे । ऊदल और मलखान युद्ध का यह अद्भुत दृश्य देखकर चिन्ता में पड़ गए । अतः उन्होंने अपना मोर्चा हटा लिया । मलखान तथा देबा से मंत्रणा करके ऊदल बेंदुला पर सवार होकर नैनागढ़ जाते हैं । किसी तरह सोनवां के महल में पहुँचकर युद्ध का सारा समाचार कह सुनाते हैं । ऊदल ने सोनवां से कहा, कि-"अमरढोल की महिमा के कारण विजय प्राप्त करना संभव नहीं है । हमारी सेना के हजारों जवान रणभूमि में धराशायी हो गए हैं ।"

रानी सोनवां, ऊदल को एक युक्ति बतलाती है । उसने कहा कि-"कल मैं ढोल लेकर देवीपूजन करने आऊँगी । वहाँ तुम मालिन-वेश में मिलना ।" ऐसा ही होता है । बड़े आग्रह करने पर राजा नैपाली अपनी बेटी को अमरढोल देकर देवीपूजन हेतु मंदिर में भेजते हैं । ऊदल वहाँ पहले से ही उपस्थित थे । जब सोनवां देवी-पूजन में लीन हो जाती है, तो ऊदल ढोल लेकर लश्कर में वापस आ जाते हैं । लश्कर में आकर ऊदल पुनः युद्ध का मोर्चा बनाकर जोगा-भोगा को युद्ध के लिए ललकारते हैं ।

नैनागढ़ की सेना में राजा नैपाली के तीनों पुत्र-जोगा, भोगा, विजया तथा पटना के राजा पूरनसिंह भीषण तलवारों की मार कर रहे थे । इधर महोबा सेना की ओर से ऊदल, मलखान, देबा, सैयद, जगनिक व मन्नागुजर अपनी-अपनी तलवारों का अपूर्व जौहर दिखला रहे थे । ताल्हन सैयद, देबा और मलखान की युद्ध-कला से जोगा-भोगा की सेना में खलबली मच गई । उनकी सेना भागने लगी । वह पुनः चिंतित होकर अपने पिता के पास जाते हैं । स्थिति से अवगत कराते हैं । नैपाली महलों में अम्मरढोल की तलाश करते हैं, परन्तु वह तो महोबा वीरों के हाथ लग चुका था । राजा निराश हो जाता है । वह तुरन्त देवी की पूजा करने के लिए मंदिर में जाता है । विधिवत पूजा करने से देवी प्रसन्न होती है और राजा की इच्छा के अनुसार अम्मरढोल हेतु राजा इन्द्र के पास जाती है । इन्द्र देवताओं को अमरढोल लाने का आदेश देते हैं ।

कुछ ही क्षण में देवता-गण अम्मरढोल लाकर इन्द को प्रदान करते हैं।

उसी समय राजा इन्द्र को देवी शारदा द्वारा आल्हा को दिए गए वरदान का स्मरण होता है। वह कहते हैं :-

बोले इन्द तब देवी से, देवी सुनो हमारी बात।
आल्हा अम्मर हैं दुनिया में, यह बर दियो शारदामाय।
काम नहीं हैं सब आल्हा के, जो अब ढोल दै हौं गहाय।
हुक्म दे दियो यह इन्द्र ने, औ देवन से कही सुनाय।
ढोल फोरि देउ तुम जल्दी से, जासें दोउ धर्म रहि जायं।§1§

इन्द्र का विचार सुनकर देवी मंदिर में वापस आती है। उधर राजा नैपाली को स्वप्न होता है, कि अब अमरढोल वापस नहीं मिलेगा। अतः वह निराश-चिन्ता होकर सुन्दरबन के राजा अरिनंदन को सहायता हेतु पत्र लिखता है। समाचार पाकर अरिनंदन अपने सैन्यबल के साथ नैनागढ़ में नदी के किनारे उपस्थित हो जाते हैं। दुर्भाग्य से आल्हा उसी नदी में स्नान करने गए हुए थे। अरिनंदन कपट-पूर्ण व्यवहार से आल्हा को बन्दी बना लेता है। वह अपने सैन्यबल के साथ वापस अपने राज्य की ओर प्रस्थान कर देता है। इधर आल्हा का स्नान करके लश्कर में वापस न आना सभी की चिन्ता का कारण बन जाता है। आल्हा की खोज की जाती है, परन्तु मिलना संभव नहीं होता है।

ढेबा चूंकि पुरोहित पुत्र था एवं ज्योतिष का ज्ञाता था। अतः वह ऊदल को बताता है, कि आल्हा को अरिनंदन ने छल करके कैद कर लिया है। व्यापारी वेश में आल्हा की कैद छुड़ाई जा सकती है। ऊदल घोड़ों के व्यापारी बनकर सुन्दरबन जाते हैं। सुन्दर घोड़ों को देखकर अरिनन्दन उन्हें खरीदना चाहता है। ऊदल से वह मोल-भाव करता है, परन्तु ऊदल कहते हैं, कि चाल परीक्षण के बाद ही कीमत बताई जाएगी। राजा घोड़ों की चाल-परीक्षा के लिए सैनिकों को बुलाता है, परन्तु वे घोड़ों पर सवारी करने में असमर्थता व्यक्त करते हैं। यह साधारण घोड़े नहीं थे, हवा में उड़नेवाले बड़ी नस्ल के घोड़े थे। उनकी असमर्थता देखकर ऊदल प्रस्ताव रखता है, कि यदि कोई महोबा या कन्नौज सेना का सिपाही हो, तो घोड़ों पर सवारी कर सकता है, क्योंकि इस प्रकार के घोड़े इन राजाओं के पास हैं।

द्रष्टव्य : §1§ बड़ा आल्हखण्ड - पं.सीताराम, पृ.164.

ऊदल की बात सुनकर अरिनन्दन आल्हा को बुलाते हैं तथा घोड़े की चाल-परीक्षण के लिए प्रस्ताव रखते हैं । ऊदल का इशारा पाकर आल्हा घोड़ा करेलिया पर सवार होकर एड़ लगाते हैं । इस प्रकार दोनों भाई नैनागढ़ आकर लश्कर में पहुँचते हैं । सभी लोग प्रसन्न हो जाते हैं ।

आल्हा की कैद छुड़ाने के बाद मलखान आदि वीर पुनः राजा नैपाली की सेनाओं को युद्ध के लिए ललकारते हैं । इसबार पुनः भीषण युद्ध होता है । अन्त में जोगा, भोगा, विजया तथा पूरन राजा कैद कर लिए जाते हैं । ढेबा, सैयद उन्हें मार डालना चाहते हैं, परंतु मलखान उन्हें मना कर देते हैं । महोबा सेना की विजय होती है । इनकी विजय देखकर माहिल के दिल में ईर्ष्या की अग्नि प्रज्वलित होने लगती है । अतः वह लिल्ली घोड़ी पर सवार होकर नैनागढ़ दरबार में हाजिर होते हैं । राजा नैपाली से मंत्रणा करते हुए, उन्हें सलाह देते हैं, कि युद्ध में मलखान-ऊदल आदि को जीतना संभव नहीं है । आप आल्हा को अकेले छलपूर्वक महलों में विवाह हेतु लाइए और वहीं उनकी हत्या करवा दीजिए ।

माहिल का यह प्रस्ताव नैनागढ़-नरेश को पसन्द आ जाता है, क्योंकि वह तो वैसे भी बनाफरों के साथ अपनी राजकुमारी का विवाह नहीं करना चाहते थे । अस्तु वे महोबा के   लश्कर में जाते हैं । अधीनता स्वीकार कर, विवाह का प्रस्ताव स्वीकार कर लेते हैं । शुभ मुहूर्त देखकर वह आल्हा को अकेले महलों में भावरों हेतु आमंत्रित करते हैं । ऊदल को उनके प्रपंच-व्यवहार पर शंका होती है, परन्तु वह गंगा की शपथ कर देते हैं । अब आल्हा पालकी में सवार होकर मलखान, ऊदल, ढेबा, ताल्हन सैयद, मन्नागूजर, सुलखान तथा रूपनबारी आदि वीरों सहित नैनागढ़ के राजमहल की ओर विवाह हेतु प्रस्थान करते हैं । जोगा-भोगा आदि को कैद से रिहा कर दिया जाता है ।

महलों में पहुँचकर मंडप के नीचे भावरों की लोकरीति का निर्वाह किया जाता है । वहां प्रत्येक भावंर पर आल्हा के ऊपर प्रहार किया जाता है, जिसे महोबा वीर नाकाम कर देते हैं । राजा नैपाली जादू का प्रयोग करते हैं, जिसे सोनवां व्यर्थ कर देती हैं । भावरों की रीति का निर्वाह होने के बाद सोनवां की विदाई के लिए पालकी आती है । सोनवां की विदाई होती है । वह पालकी में बैठकर लश्कर की

- -

संदर्भ : आल्हा का ब्याह - भागीरथ कहार, संस्करण 1962.

ओर चलती है, उधर कोठरियों में छिपे हुए सैनिक एक साथ आक्रमण कर देते हैं। मलखान, ढेबा आदि उनका मुँहतोड़ जवाब देते हैं परन्तु आल्हा पालकी में पीछे रह जाते हैं और उन्हें कैद कर लिया जाता है। लश्कर में आकर, आल्हा को न पाकर सभी चिंताग्रस्त हो जाते हैं।

सोनवां भी अपने प्रियतम को न पाकर व्याकुल होने लगती है। ऊदल और सोनवां ढेबा के मंतव्य के अनुसार नैनागढ़ जाते हैं। ऊदल घोड़ों के व्यापारी का रूप धारण करता है तथा सोनवां गूजरी की वेशभूषा बनाती है। वह पहले मालिन द्वारा आल्हा के बारे में पता करती है। मालिन सोनवां को जानती थी, अतएव सारा हाल बतला देती है। सोनवां महलों में जाकर आल्हा का पता करके वापस आती है। ऊदल को सारी जानकारी देती है। ऊदल घोड़ों के व्यापारी के रूप में राजा नैपाली के दरबार में हाजिर होते हैं। जब वह घोड़े खरीदने के बारे में ऊदल से बातचीत करते हैं, तो ऊदल पहले घोड़ों की चाल की परीक्षा लेने के लिए कहते हैं। राजा ने अश्वारोहियों को बुलाया, परन्तु वे घोड़ों को स्पर्श करने में भी असमर्थ थे। क्योंकि यह साधारण घोड़े नहीं थे। ऊँची किस्म के घोड़े थे। ऊदल राजा से निवेदन करते हैं कि यदि कोई सैनिक अश्वारोही दिल्ली या महोबा का हो, तो वह अवश्य ही इन घोड़ों पर सवारी कर सकता है। ऊदल ने बहाना किया, कि इस नस्ल के घोड़े पृथ्वीराज चौहान व परमाल के पास हैं।

ऊदल की बात सुनकर घोड़ों की चाल की परीक्षा हेतु राजा नैपाली आल्हा को खंदक से बाहर बुलाता है तथा करेलिया घोड़े पर सवार होने का आदेश देता है। ऊदल का इशारा पाकर आल्हा घोड़े पर सवार होकर द्रुतगति से किले के बाहर निकल आते हैं। ऊदल भी उनके साथ लश्कर में वापस आ जाता है। सभी खुश हो जाते हैं। विजय का घोष करती हुई, महोबा सेना अपने तम्बुओं को उखाड़ कर पालिकी की तैयारी कर, प्रस्थान कर देती हैं। महोबा वापस आकर मदनताल पर सेना पड़ाव डाल देती है। रूपन द्वारा सूचित होने पर राजा परमाल, मल्हना, देवल, ब्रह्मा आदि बहुत खुश हो जाते हैं। आल्हा-सोनवां की पालकी महलों में पहुँचती हैं। वे मल्हना व परमाल तथा अन्य माताओं को प्रणाम करते हैं। माताएँ उनकी आरती उतारती है तथा लोकरीति व कुलरीति का निर्वाह करती हैं। मल्हना सोनवां को नौलखाहार उपहार में देती है। अन्य रानियां भी सोनवां रानी को उपहार देती हैं।

महलों में मंगलाचार होता है । नेगियों, परिचारको व प्रजाजनों को नाना प्रकार के वस्त्र-आभूषण उपहार में प्रदान किए जाते हैं । नगर सजाया जाता है । अन्त में उदल सभी आगन्तुक राजाओं को उचित सम्मान देकर विदाई करते हैं ।

परमाल रासो की श्रृंखला में अगली लड़ाई पथरीगढ़ की लड़ाई है ।

पथरीगढ़ ‌[कर्तोंदी] की लड़ाई :-

पथरीगढ़ की लड़ाई मलखान के ब्याह की लड़ाई है, जो परमाल रासो [आल्हखंड] में दसवीं लड़ाई के नाम से जानी जाती है ।

मलखान बनाफर बच्छराज के पुत्र थे । इनका विवाह पथरीगढ़-नरेश गजराजा की सुपुत्री गजमोतिन के साथ सम्पन्न हुआ । पथरीगढ़ गुजरात राज्य में एक जगह है, जो जुन्नागढ़, कोटकर्तोंदी, बिसहिन आदि नामों से विख्यात है । राजा गजराजा की सुपुत्री गजमोतिन अत्यन्त रूपवती और गुणवती थी । जब वह बारह वर्ष की हो गई, तो उसकी सखी-सहेलियाँ हास्य-व्यंग करने लगीं । रानी को भी अपनी पुत्री के विवाह की चिन्ता हुई । अतः जब राजा रंगमहल में पधारे, तो रानी ने विवाह प्रस्ताव किया । रानी की बात सुनकर राजा ने तुरन्त दरबार में जाकर चारों नेगियों [ब्राह्मण, नाई, भाट, पुरोहित] को बुलाकर राज-वंश की मर्यादा के अनुसार अपनी पुत्री का टीका सूरजमल के साथ भेजने का प्रबन्ध किया । उन्होंने सूरजमल को निर्देश दिया, कि- किसी कुलीन राजा के यहाँ वह टीका चढ़ाए । ध्यान रहे कि टीका लेकर महोबा न जाएं । बनाफर वंश निम्नस्तरीय राजपूत वंश है ।

सूरजमल [गजराजा का पुत्र] नेगियों के साथ अपनी बहिन का टीका लेकर दिल्ली-पति पृथ्वीराज चौहान के दरबार में गया । उन्होंने टीका स्वीकार नहीं किया । इसके बाद वह कन्नौज-नरेश जयचंद के दरबार में गया, परन्तु उन्होंने भी टीका चढ़वाना मंजूर नहीं किया । उसका कारण यह था, कि कोई भी राजा गजराजा की कटीली फौजों का सामना करने के लिए तैयार नहीं था । पथरीगढ़-नरेश के पास न केवल सैन्यबल था, अपितु श्यामा मालिन [जादूगरनी] तथा अगनिया घोड़ा भी था । जादू की लड़ाई का सामना करना साधारण बात नहीं थी । घोड़ा अगिनियाँ अग्नि की वर्षा करता था ।[1] अस्तु, साधारण राजा सहज में ही गजराजा से युद्ध नहीं करना

[1] बड़ा आल्हखण्ड - पं. महावीरप्रसाद जी, पृ. 181.

चाहता था ।

सूरजमल निराश होकर, उरई से होकर पथरीगढ़ जाना चाहते थे, तभी ऊदल से मुलाकात हो जाती है । ऊदल उस समय शिकार खेल रहे थे । ऊदल ने सूरज को बताया, कि तुम महोबा जाकर राजा परमाल के यहाँ वीर मलखान को टीका चढ़ा दो । पहले तो वह तैयार नहीं हुआ, परन्तु अन्त में सोच समझकर महोबा की ओर चल दिया । कारण यह कि एक तो बहिन का टीका चढ़ाना ही था, दूसरी, पिता के निर्देश का पालन भी करना था । सूरज के साथ ऊदल भी जाते हैं । महोबा के वैभव को देखकर सूरज दंग रह जाता है । चंदेले के दरबार में पहुँचकर राजा परमाल को अभिवादन करता है तथा टीका की पत्री समर्पित करता है । राजा पत्र पढ़कर शंका में डूब जाते हैं । आल्हा-ऊदल के पूंछने पर उत्तर देते हैं, परन्तु टीका चढ़ाने से इनकार करते हैं । आल्हा उन्हें चन्द्रवंशी गरिमा से पुनर्बोध्य की स्थिति में ले जाते हैं । अन्त में वह गजराजा के पत्र को स्वीकार करके मलखान का टीका चढ़ाने के लिए तैयार हो जाते हैं ।

राजा की आज्ञा पाकर महलों में टीका चढ़ाने की तैयारियाँ होने लगती हैं । मंगलगीत व वेदमंत्रों के जाप के साथ मलखान का टीका चढ़ाया जाता है । ब्राह्मण, पुरोहित व नेगियों को रानी मल्हना व परमाल द्वारा नाना प्रकार के उपहार दिए जाते हैं । चूड़ामणि पंडित को बुलाकर विवाह का शुभ मुहूर्त निकाला जाता है । इसप्रकार विवाह की तिथि माघ मास शुक्ल पक्ष तेरस तय की जाती है।‖1‖ सूरज अपनी बहिन का टीका चढ़ाकर वापस पथरीगढ़ की ओर रवाना हो जाते हैं । इधर महोबा में बारात की तैयारियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं । सभी राजाओं को आमंत्रित किया जाता है । बौरीगढ़, दिल्ली, कन्नौज आदि नरेश अपने निश्चित समय के लिए सैनिक- तैयारी करने लगते हैं ।

गजसिंह परिवार को जब यह पता चलता है, कि गजमोहिन का टीका महोबा में मलखान को चढ़ा दिया गया है, तो वह ईर्ष्या की अग्नि में जलने लगते हैं और घोड़ी सिल्ली पर सवार होकर बुन्नागढ़ दरबार में पहुँचते हैं । राजा गजराजा को बहकाते हैं, कि आपने निम्न कुल में टीका चढ़ाया है । परन्तु अब कोई चारा शेष न रह गया था । अतः यह तय हुआ, कि महोबा-सेना ‖बारात‖ जब पथरीगढ़

‖1‖ बड़ा आल्हखण्ड - पं. महावीरप्रसाद जी, पृ. 187.

पधारेंगी, तो छल-कपट पूर्ण व्यवहार के द्वारा समस्त बनाफल-वीरों की हत्या करदी जाएगी । इस प्रकार कुल मर्यादा भी रह जाएगी और युद्ध भी नहीं करना पड़ेगा ।

इस प्रकार मलखान के विवाह की नियत तिथि आ पहुँची । सभी आमंत्रित राजा-गण अपने सैन्यबल के साथ महोबा में पहुँचने लगे । सभी का परमाल तथा आल्हा आदि ने यथोचित सम्मान किया । सभी लोकरीति व कुलरीति के निर्वाह के उपरांत महोबा से पथरीगढ़ के लिए बारात प्रस्थान करने लगी । राजसी शान व वैभव अनोखा था । तोपें, हाथी, घोड़े व पैदल सेना अपने अपूर्व उत्साह का परिचय दे रही थी । आल्हा, ऊदल, देबा, ताल्हन सैयद, ब्रह्मा, सुलखान, माहिल, लाखन, मोहन [बौरीगढ़ से] जगनिक, मन्नागूजर आदि वीर अपने-अपने वाहनों पर सवार ऐसे प्रतीत हो रहे थे, जैसे मानों इन्द्रलोक पर आक्रमण करने के लिए जा रहे हों । मलखान पालकी में सवार थे ।

सिलहिल [पथरीगढ़] पहुँचकर बारात अपना पड़ाव डाल देती है । समस्त क्षत्री आराम करने लगते हैं । अब लोक-परंपरा के अनुसार सेपनवारी हेतु रूपनवारी को गजराजा के दरबारमें नेगी के रूप में भेजा जाता है । दरबार में पहुँचकर रूपन अपने नेग के रूप में युद्ध की इच्छा प्रकट करता है । अतः सूरजमल के साथ उसका पथरीगढ़ के दरबार में भीषण युद्ध होता है । वह अपनी तलवार का जौहर दिखाकर बारात में वापस आ जाता है तथा सारा हाल आल्हा से बयान करता है । रूपनवारी की वीरता देखकर गजराजा आश्चर्य में पड़ जाते हैं । वह सोचने लगते हैं, कि जिसके बारी की इस प्रकार की वीरता है, उसके मालिकों का जौहर कितना आश्चर्य जनक होगा ? अतः वह माहिल की चुगली के अनुसार बारात में जहर मिला हुआ शर्बत भेजता है । देबा शकुनी उसे नाकाम कर देता है, जिससे सभी वीरों के प्राण बच जाते हैं ।

माहिल पुनः गजराजा से मिलकर उसे सलाह देते हैं कि- महोबा सेना से युद्ध में विजय पाना संभव नहीं होगा । अतः आप इनसे अधीनता स्वीकार करलो तथा छल से मलखान को महलों में लाकर हत्या करदो । गजराजा को यह सलाह पसंद आती है । उचित भेंट लेकर वह बारात में जाता है तथा अकेले मलखान को भांवर डालने का बहाना करके लाता है । आल्हा द्वारा कपट-व्यवहार की चर्चा करने पर वह गंगा उठा लेता है ।

अकेले मलखान पालकी पर सवार होकर गजराजा के साथ बिसहिन के राजमहल में आते हैं । पथरीगढ़-नरेश कपट-व्यवहार करके उन्हें बन्दी बना लेता है तथा स्तम्भ से बाँधकर हरे बाँसों से मारता है, तत्पश्चात गहरे खंदक में डलवा देता है । जब अपनी सेविका द्वारा गजमोतिन को यह मालूम होता है, कि मलखान को उसके पिता ने गहरे खंदक में डलवा दिया है, तो वह चिंतित होती है और रात्रि में उसे निकालने का प्रयास करती है । मलखान उसके पिता के कपट-व्यवहार के लिए उसे खरी-खोटी सुनाते हैं । परन्तु गजमोतिन तो मलखान को पहले से ही वरण कर चुकी थी । अस्तु वह अपने पिता के व्यवहार के लिए मलखान से क्षमा माँगती है । मलखान के कहने के अनुसार वह अपनी बाँदी द्वारा आल्हा के पास मलखान के कैद की सूचना भेजती है । माहिल यहाँ भी प्रपंच करते हैं, परन्तु सफल नहीं होते हैं ।

मलखान की कैद सुनकर आल्हा बहुत दुखी हो जाते हैं । वह तुरन्त ही सारे लश्कर को युद्ध के लिए तैयार होने का आदेश दे देते हैं । उधर गजराजा के तीनों बेटा- सूरजसिंह, कान्तामल तथा मानसिंह युद्धभूमि में सेना सहित उपस्थित हो जाते हैं । दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध होता है । ऊदल, ढेबा, सैयद आदि की भीषण मारों से बिसहिन सेना की पर्याप्त हानि हो जाती है । चिंतित होकर सूरजमल अपने पिता के पास जाता है । पथरीगढ़-नरेश ने जब यह सोचा, कि सामान्य युद्ध से विजय प्राप्त करना संभव नहीं है, तो उसने जादू के युद्ध के लिए श्यामा भगतिन को आदेश दिया । अतः वह युद्ध भूमि में उपस्थित होकर जादू का प्रयोग करने लगी । जादू के प्रयोग से समस्त महोबा-सेना मूर्छित हो गई । केवल ढेबा शेष रह गए ।

जब आल्हा को यह सूचना मिली, तो उन्होंने ढेबा को रानी सोनवां को बुलाने के लिए महोबा भेजा । कारण यह था, कि सोनवां जादू विद्या में निपुण थी । ढेबा महोबा जाते हैं, सारे हालातों से अवगत कराते हैं तथा सोनवां से आल्हा के आदेश की बात कहते हैं । सोनवां देवी के मंदिर में जाकर आराधना करती है । बलि चढ़ाती है । देवी प्रसन्न होकर उसे अमृत प्रदान करती है । अमृत लेकर वह घोड़ा पपीहा पर सवार होकर ढेबा के साथ पथरीगढ़ पहुँचती है । मूर्छित लश्कर पर अमृत छिड़क कर उनकी मूर्छा जगाती हैं । पुनः भीषण युद्ध होता है ।

श्यामा भगतिन जैसे-जैसे जादू का प्रहार करती है, सोनवां उसे नाकाम करती जाती है । अन्त में विवश होकर सोनवां ऊदल को श्यामा की हत्या करने का

इशारा करती है । ऊदल नारी जाति की हत्या करना उचित नहीं समझते हैं, परन्तु उसका जूड़ा काट लेते हैं जिससे उसका जादू शक्तिहीन हो जाता है । श्यामा की जादू-नाकामी की सूचना पाकर राजा गजराजा अगिनियां घोड़े पर सवार होकर रणखेत में आ धमकता है । घोड़ा आग की लपटें छोड़ रहा था, जिससे ऊदल की सेना में त्राहि-त्राहि मच गई । सोनवां के इशारे से ऊदल ने घोड़े की पूंछ काटकर उसके भी जादू को शक्ति-हीन बना दिया ।

अब आल्हा स्वयं हाथी पचशावद पर सवार होकर रणक्षेत्र में आ गए । भीषण संग्राम हुआ । अन्त में हाथी पचशावद ने सांकल फेरी, जिससे गजराज सहित उनके तीनों पुत्र बन्दी बना लिए गए । राजा को लेकर आल्हा पथरीगढ़ गए और मलखान को कैद से मुक्त कराया । राजा ने आल्हा की अधीनता स्वीकार की और अपनी पुत्री के विवाह के लिए तैयार हो गया । उसके तीनों बेटों की भी रिहाई करदी गई । पथरीगढ़-नरेश अब बनाफल परिवार के खास-खास लोगों को महलों में भांवरों हेतु आमंत्रित करता है । माहिल के षड्यन्त्र के कारण वहां भी छल-प्रपंच के साथ युद्ध होता है । गजराजा को बंदी बनाकर ऊदल, मलखान और गजमोतिन की भांवरें डलवाते हैं । भात बुलावा में निहत्थे बनाफल वीरों पर पुनः गजराजा द्वारा धोखे से आक्रमण किया जाता है, परन्तु उसकी सारी चालें सार-हीन हो जाती हैं ।

अन्त में अपनी रानी और गजमोतिन के समझाने से वह आल्हा की अधीनता स्वीकार करके अपनी बेटी को विदा कर देता है । गजमोतिन अपनी सखी-सहेलियों तथा परिजनों से विदाई लेकर डोली में बैठकर जनवासे की ओर प्रस्थान करती है । राजा मलखान सहित सभी महोबा वीरों का उचित सम्मान करता है । लश्कर में विजय का डंका बजने लगता है और समस्त दल महोबा के लिए प्रस्थान कर देता है । अपने ध्वज फहराती हुई महोबा-सेना अपने गंतव्य पर पहुँचती है । आल्हा के आदेशानुसार रूपनवारी पहले से ही बारात की वापिसी का समाचार लेकर महोबा पहुँच चुके थे । अतः मल्हना आदि सभी रानियाँ प्रसन्न थीं । महलों में मंगलगीत गाए जा रहे थे । बारात के पहुँचने पर देवल, ब्रह्मा व परमाल की सभी रानियों ने लोकरीति व कुलरीति का निर्वाह किया । उपहार इत्यादि वितरित किए । आगन्तुक राजाओं को उचित सम्मान देकर ऊदल-आल्हा ने विदा किया । महोबा में घर-घर आनन्द मनाए जाने लगे ।

इस प्रकार "परमाल रासो" की शृंखला में यह दसवां संग्राम माना जाता है, जो आल्हा-ऊदल एवं अन्य बनाफर वीरों के युद्ध-जौहर एवं इतिहास की ओजस्वी झाँकी प्रस्तुत करता है ।

- -

द्रष्टव्य : 1. पथरीगढ़ की लड़ाई – कुंवर अमोलसिंह.

2. मलखान का ब्याह – —"—

3. बड़ा आल्हखण्ड – पं. सीताराम व पं. महावीरप्रसाद जी.

—:xxxxx:—